अक्टूबर-2014 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 5 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

अक्टूबर-२०१४

वर्षा की बूँदो से मिलकर,
सूर्य-प्रकाश जब छितराया।
सतरंगी मौसम चहुँ दिश में,
इन्द्र धनुष तब लहराया।
यह अपार माया है प्रभु की,
'सत्यार्थ प्रकाश' ने बतलाया।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ३४

MDH
मसाले
असली मसाले
सच-सच
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Chunky Chat masala
Chana masala
Sambhar masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
Garam masala
Kitchen King
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
आश्विन शुक्ल चतुर्दशी
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

जब देश में थी दीवाली महर्षि दयानन्द चले गए।

१०

October- 2014

०४ वेद सुधा
०६ लग जाय तो तीर नहीं तो तुक्का
११ २१ वीं सदी में स्त्री समाज (२)
१४ **A preface on the vanity of astrology**
१६ दयानन्द एक, व्यक्तित्व अनेक
२३ हमारी पहचान-भारतवासी या..?
२५ महर्षि दयानन्द का हिन्दी को योगदान
२७ सत्यार्थप्रकाश पहेली-८
२८ **Medical Science in the Vedas**
३० नारी सम्मान

समाचार २१
हलचल २२

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन	३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - ५

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

वाचस्पतिसूक्त

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।1।। - अथर्व. १।१।।

(ये) जो (त्रि-सप्ताः) तीन गुणा सात तत्व (विश्वा रूपाणि) संपूर्ण रूपों को (बिभ्रतः) धारण करते हुए (परियन्ति) सब ओर फैल रहे हैं, (तेषां तन्वः) उनके शरीरों के (बला) बल (अद्य) आज (मे) मेरे लिये (वाच.पतिः) वाणी का स्वामी (दधातु) दान करे।

सब जगत् के पदार्थ "तीन गुणा सात" अर्थात् इक्कीस तत्वों से बने हैं। पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश, तन्मात्र, अहंकार इन सात पदार्थों में सत्व-रज-तम के कारण, प्रत्येक के तीन-तीन भेद होकर इक्कीस पदार्थ होते हैं। हरएक पदार्थ में न्यूनाधिक मिश्रण से जगत् के संपूर्ण पदार्थ बनते हैं। हरएक पदार्थ में न्यूनाधिक परिमाण से ये इक्कीस पदार्थ हैं। हमारे आत्मा के लिये यह नरदेह प्राप्त हुआ है, इसमें भी ये इक्कीस तत्व न्यूनाधिक परिमाण से हैं। इनके बल से ही शरीर में बल की स्थिति होती है। इसलिये मंत्र में कहा है, कि इन इक्कीस तत्वों के अन्दर जो बल है उन बलों का निवास आज ही मेरे शरीर में हो। अर्थात् बल बढ़ाने का अनुष्ठान करने वाला विचार करे, कि अपने अन्दर किस तत्व की कमजोरी है। इसका ठीक विचार होने पर उस बात की वृद्धि करके उस न्यूनता की पूर्ति करे। इस प्रकार अपने अन्दर संपूर्ण बलों की परिपूर्णता करे। और किसी प्रकार की न्यूनता न रखे।

"वाणी का पति" आत्मा है। क्योंकि वही वाणी का प्रेरक है। यही पूर्वोक्त बल इच्छाशक्ति से अपने शरीर में रखे। आत्मा की प्रबल इच्छा शक्ति से ही बल की वृद्धि संभवनीय है।

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्।।२।। - अथर्व. १।२।।

हे (वाचः पते) वाणी के स्वामी। (देवेन मनसा सह) दिव्य शक्ति से परिपूर्ण मन के साथ (पुनः एहि) बारम्बार आ। हे (वसोः पते) सुख के स्वामी! (निरमय) निरन्तर आंनद दो और (मयि) मेरा (श्रुतं) ज्ञान (मयि एवं अस्तु) मेरे अन्दर रहे।

मन दैवी शक्ति से युक्त होता है और कभी कभी राक्षसी शक्ति से अथवा आसुरी शक्ति से भी युक्त बनता है। इसलिये मनको आसुरी राक्षसी वृत्तियों से दूर कर दैवी भावनाओं से ही परिपूर्ण बनाना आवश्यक है। क्योंकि दैवी भावनाओं से युक्त मन उन्नति का साधक है और हीनवृत्ति वाला मन बाधक होता है। वाणी का प्रेरक आत्मा पुनः पुनः मन के अन्दर दैवी भावना की स्थापना करे, क्योंकि एक वार दैवी भावना से स्फुरित हुआ हुआ मन थोड़े काल के पश्चात् राक्षसी विचार से युक्त बन सकता है, इसलिए जागरूकता के साथ मन में बारम्बार दैवी भाव स्थापित करने का यत्न करना चाहिये।

"वसु" का अर्थ है "मंगल, शुभ, श्रेय, कल्याण, सुख, धन" इसका स्वामी आत्मा है। इसलिए वह जहाँ आत्मिक बल रखता है वहाँ शुभ मंगल बना देता है। दिव्य भावनाओं से परिशुद्ध बना हुआ मन आत्मिक बल से युक्त होने पर आनन्दरस से परिपूर्ण बनता है।

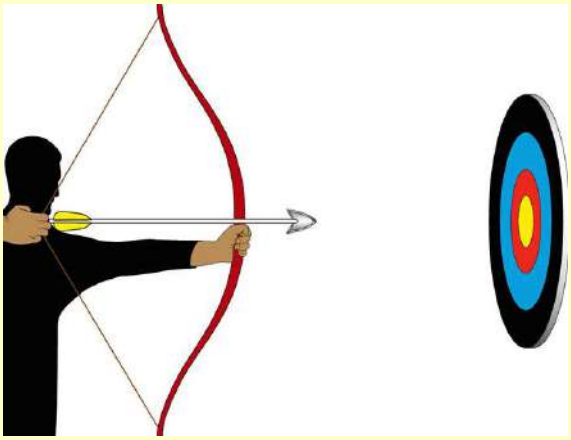

यह सब बनने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान के बिना पूर्वोक्त सिद्धि नहीं होगी। इसलिए अपने अन्दर ज्ञान की वृद्धि करने का यत्न करना हरएक को अत्यावश्यक है।

(१) ज्ञान की वृद्धि होने से मन दैवी भावनाओं से शुद्ध बनता है,
(२) शुद्ध मन में आत्मिक बल वसता है,
(३) और जहाँ दिव्य मन और आत्मिक बल है, वहाँ आनंद रहने में शंका ही क्या हो सकती है?

इहैवाभि वि तनूभे आर्त्नीइव ज्यया।
वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्।।३।। - अथर्व. १।३।।

(ज्यया आर्त्नी इव) डोरी से धनुष्य के दोनों नोंक जैसे बाँधे

जाते हैं, उस प्रकार (इह एव) यहाँ ही (उभे) दोनों को (अभि वितनु) हमारे चारों ओर फैलाओ। (वाचस्पतिः) वाणी का पति (नियच्छतु) नियम में रखे। (मयि श्रुतम्) मेरा ज्ञान (मयि एव अस्तु) मुझ में रहे।

जैसे डोरी से धनुष्य के दोनों नोंक बाँधे जाते हैं, इसी प्रकार दैवी शक्ति से परिपूर्ण अपने मन से ज्ञान और कर्म इन दोनों को बाँध कर रखना चाहिये। वाणी का पति आत्मा इस नियम को मन में रखे अर्थात् वह अपने शुद्ध मन से ज्ञान और कर्म को बाँध कर रखे और उनके द्वारा अपनी सब प्रकार की उन्नति सिद्ध करे। इन सब की सिद्धि के लिये अपने अन्दर ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिये।

उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान्वाचस्पतिर्ह्वयताम्।
सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि॥४॥ - अथर्व. १।४।।

(वाचः पति) वाणी का पति आत्मा (उपहूतः) हमने बुलाया है, वह (वाचस्पतिः) वाणी का पति (आस्मान्) हमको (उप हयताम्) बुलावे। (श्रुतेन) ज्ञान से (संगमेमहि) हम संयुक्त रहें, (श्रुतेन) ज्ञानसे (मा विराधिषि) मैं अलग न होऊँ।

आत्मा से बल प्रार्थना करने पर वह आत्मा-बल देता है। इस प्रकार आत्मिक बल की प्राप्ति करने के लिये हम सबको उचित है, कि हम अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करें और कदापि विरोध न करें।

- श्रीपाद् दामोदर सातवलेकर
साभार (वेदामृत)

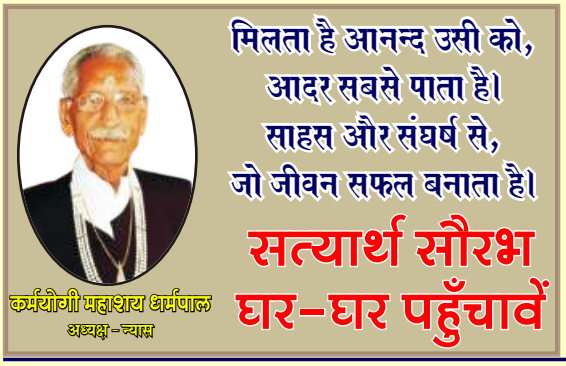

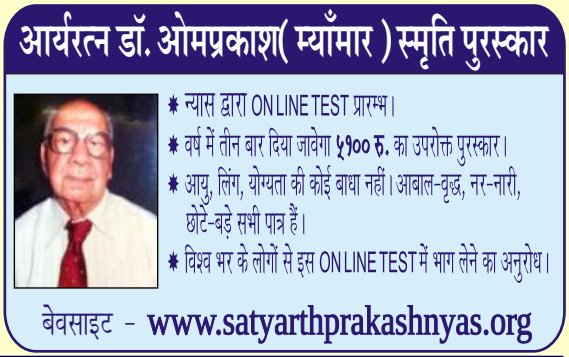

आत्म निवेदन

लग जाय तो तीर नहीं तो तुक्का

एक बालक भी यदि दस बार डार्ट फैंकता है तो उसका निशाना भी एक दो बार तो लग ही जाता है। संभाव्यता का नियम (Law of Probability) भी यह मानता है। यही स्थिति फलित ज्योतिष की है। कभी कभार तुक्का लग जाता है तो फलित ज्योतिष को विज्ञान की श्रेणी में घोषित करने का घोष किया जाता है। आश्चर्य है कि हजारों बार जब फलित ज्योतिषी उलटे मुँह गिरता है तब उसे जन-मानस शीघ्र विस्मृत कर देता है। इसके कई मनोवैज्ञानिक कारण हैं। परन्तु फलित ज्योतिष का व्यापार इसी बौद्धिक सुप्तावस्था के कारण फल-फूल रहा है। बौद्धिक सर्वनाश से बचना तथा आमजन को बचाना आर्य समाज का प्रमुख कार्य है। पर इस ओर अधिक चिंतन होकर ठोस कार्य नहीं हो पा रहा है। सत्यार्थ सौरभ के माध्यम से जन-जन में तर्क की प्रतिष्ठा का विनम्र प्रयास हम करते रहे हैं और करते रहेंगे।

१५ मई २०१४ की शाम थी। मेरा विचार है कि इस दिन सर्वाधिक व्यक्ति अपने अपने टेलीविजन की स्क्रीन से चिपके हुए होंगे। कारण कि दूसरे दिन १६ मई को चौदहवीं लोकसभा के ऐतिहासिक चुनावों के परिणाम आने वाले थे। मैंने देखा है कि प्रायः ज्योतिषी घटना घट जाने के बाद, हमने तो पहले ही बता दिया था, ऐसा दावा करते हैं। मैं सोच ही रहा था कि अबकी बार ज्योतिषियों की भविष्यवाणियाँ अभी सामने नहीं आईं इतने में ही देखा कि एक प्रसिद्ध चैनल पाँच ज्योतिषियों को लेकर उपस्थित हुए और उनसे श्री नरेन्द्र भाई मोदी के प्रधानमंत्री बनने की संभावना पर अपनी भविष्यवाणी करने का निवेदन किया। उनमें से तीन ने श्री मोदी के प्रधानमंत्री बनने की संभावना से साफ इंकार कर दिया। एक का कथन था कि कोई महिला ही प्रधानमंत्री बनेगी जबकि अन्य दो ने श्री मोदी के प्रधानमंत्री बनने की संभावना को दावे के साथ तो नहीं परन्तु संभावना के रूप में ही स्वीकार किया।

इसी प्रकार इन्हीं चुनावों की बात करें तो एक प्रसिद्ध ज्योतिषी एवं बृहन्महाराष्ट्र ज्योतिष मंडल के अध्यक्ष श्री नन्द किशोर ने ५ अप्रैल २०१४ को एक प्रेस कांफ्रेंस की तथा घोषणा की कि उन्होंने तथा उनके साथियों ने लोकसभा चुनाव लड़ने वाले ४००० उम्मीदवारों की जन्मपत्रियों का अध्ययन किया है और उनकी निश्चित घोषणा थी -

भाजपा को १५५ से १६५ सीट मिल सकेंगी। नरेंद्र मोदी प्रधान मंत्री नही बन सकते तथा जो भी सरकार बनेगी वह कांग्रेस के ११५ सांसदों के सहयोग से बनेगी। इन भविष्यवाणियों का क्या हश्र हुआ यह आप सब जानते हैं। इन्हें मिलाकर इन्होंने २२ भविष्यवाणियाँ कीं जिनमें से १८ गलत निकलीं और २ अभी भविष्य के गर्भ में हैं।

बंगलौर के एक ज्योतिषाचार्य ने एन. डी. ए. को केवल २००-२२० सीटें दी जबकि जनता ने ३४०।

एक प्रसिद्ध ज्योतिषी जी का कहना है कि कांग्रेस और भाजपा दोनों की साढ़े साती चल रही है। पर इसी दशा में मोदी जी ने इतिहास रचा।

✹ पं. दीपक जी अधिकांश ज्योतिषियों की तरह नाकाम रहे। पं. दीपक जी ने अपने असफल होने पर चिंता जाहिर की परन्तु कारण के रूप में उन्होंने मोदी जी की जन्मकुंडली का गलत होना बताया तथा सही जन्म कुण्डली भी खोज ली। साथ ही मार्केटिंग स्ट्रेटजी के अंतर्गत एक और भविष्यवाणी कर दी कि ७ नवम्बर २०४१ को महाप्रलय होगी। जनता को १ दिन पुरानी भविष्यवाणी तो याद नही रहती उम्मीद करेंगे कि २०४१ और पं. दीपक जी को याद रखेंगे, पिछले २० वर्षों में हुई ५ महाविनाश की घोषणाओं सहित।

धन्य है कल्पना लोक में जीने वाले इंसानों को। जब तथाकथित ज्ञानियों से काम नहीं चला तो जानवरों से वही काम लिया जा रहा है। गत फुटबाल विश्व कप में एक ऑक्टोपस ज्योतिषी बने और पाल बाबा के नाम से मीडिया में सुर्खियों में रहे। इस बार

एक कछुआ। वह जिस देश के झंडे से लगी मछली को खाता था उसे विजयी होना ही था। ब्राजील के बारे में इस मजाकिया उपक्रम में तीन भविष्यवाणियाँ गलत हुयीं। उपरवर्णित भविष्यवक्ताओं के भविष्य कथन कितने सही निकले यह सब तो अब हमारे सामने ही है। वस्तुतः फलित ज्योतिष का राज्य भारत में ही नहीं विदेशों में भी विस्तृत होने का सबसे बड़ा कारण यह है कि हम ऐसी बातों पर न तो गम्भीरता पूर्वक सतर्क विचार करते हैं और विचार करते भी हैं तो भविष्य वक्ताओं के गलत साबित होने वाले दावों को आसानी से विस्मृत कर देते हैं। हम यह भी नहीं देखते कि कौन कौनसी ऐसी घटनाएँ हैं जिनके बारे में इन्होंने भविष्यवाणी नहीं की। अस्तु। कुछेक ऐसी घटनाएँ यहाँ रखना चाहूँगा जिनकी घोषणा भारत सहित विश्व के अनेकों ज्योतिषियों ने कीं और वह गलत निकलीं।

✸ अमेरिका की एक प्रसिद्ध ज्योतिष पत्रिका 'द एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन' में अनेक भविष्य वक्ताओं ने यह दावा किया था कि

भारत के १९७१ के चुनाव में श्रीमती इन्दिरा गाँधी चुनाव हार जायेंगी पर हर कोई जानता है कि उन्होंने प्रचण्ड बहुमत से यह चुनाव जीता। ऐसा ही १९८० के चुनाव में हुआ जब एक प्रसिद्ध ज्योतिषी ने दावा किया कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी कभी भी प्रधानमंत्री नहीं बन सकतीं परन्तु हमने देखा उन्होंने प्रचण्ड बहुमत प्राप्त किया, वे प्रधानमंत्री बनीं और एक स्थायी सरकार उन्होंने चलाई।

✸ १९८० में भारतीय ज्योतिष संघ ने एक बहुत बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय सभा का आयोजन किया जिसमें सभा के अध्यक्ष व सचिव ने भविष्यकथन किया कि १९८२ में पाकिस्तान के साथ युद्ध होगा जिसमें भारत विजय प्राप्त करेगा और १९८२ व १९८४ के बीच विश्व युद्ध होगा। सभी जानते हैं कि यह भविष्य कथन भी बिल्कुल गलत निकला।

यहाँ हमें यह भी देखना होगा कि विश्व में इतनी दर्दनाक घटनाएँ घटती रहती हैं जिनके बारे में ये तथाकथित भविष्यवक्ता यदि पूर्व में सचेत कर दें तो शायद जान-माल की भीषण हानि से बचा जा सकता है। मुझे स्मरण नहीं आता कि जब ९/११ को अमेरिका की सबसे ऊँची बिल्डिंग व बिजनेस सेन्टर ट्विन टावर को अलकायदा ने उड़ाया, तो उससे पहले उन ज्योतिषियों ने जो कि एक एक मिनिट तक की भविष्यवाणी सही होने का दावा करते फिरते हैं इसको पूर्व कथित किया हो। अभी हाल में मलेशिया का एक विमान गायब हो गया और एक विमान को उड़ा दिया गया। मैं सोचता हूँ कि तथाकथित फलित ज्योतिष का उपयोग यहाँ किया जाता तो मानवता की बहुत बड़ी सेवा होती।

✸ जब रूस के एक शहर Chelyabinsk में उल्का गिरी और १४९१ लोग घायल हुए और ४३०० बिल्डिंगों का भयंकर नुकसान हुआ, इसका भविष्य कथन किसी ज्योतिषी ने नहीं किया। ब्रोंक्स ट्रेन का पटरी से उतर जाने के कारण भयंकर एक्सीडेन्ट हुआ परन्तु किसी भविष्यवक्ता ने इसका कथन भी नहीं किया।

✸ सिल्विया ब्राउन नाम की विश्व प्रसिद्ध भविष्यवक्ता ने अमाण्डा वेरी की माँ को २००४ में यह कह दिया कि वह मर चुकी है। परन्तु वो मई २०१३ में अपहर्त्ता के चंगुल से छूट जिन्दा वापस मिलीं। सिल्विया ब्राउन ने अपनी ही मौत का भविष्य कथन किया था और कहा कि वह ८८ साल की उम्र में मरेंगी परन्तु उनका देहान्त ७७ साल की उम्र में ही हो गया।

✸ जेन डिक्सन विश्व की प्रसिद्ध ज्योतिषी मानी जाती हैं। कहा जाता है कि जैफ कैनेडी की हत्या की भविष्यवाणी उन्होंने

ठीक-ठीक कर दी थी। जबकि यह सही नहीं है। मई १९६८ में अमेरिका में स्कॉर्पियन नाम की सब मैरिन गायब हो गई, तो एक टीवी शो पर उन्होंने कहा कि स्कॉर्पियन के सभी ९९ व्यक्ति जिन्दा एवं सुरक्षित हैं। अन्ततोगत्वा यह भविष्यवाणी गलत निकली और पनडुब्बी के डूब जाने की वजह से एक भी व्यक्ति जिन्दा नहीं बच सका। इस पर भी डिक्सन से एक टेलीविजन शो में कहा कि मैं पहले से ही जानती थी कि पनडुब्बी के साथ क्या हुआ है। एक ट्यूब पनडुब्बी की तरफ जा रही थी जिसे मैंने देखा था। बात यह भी गलत थी क्योंकि पनडुब्बी को तारपीडो नहीं किया गया। इन्हीं डिक्सन ने कहा कि १९५८ में तृतीय विश्वयुद्ध चीन की भूमि पर आरम्भ होगा। सोवियत रूस सबसे पहले चन्द्रमा पर आदमी भेजेगा। अमेरिका के १९९२ के चुनावों में जार्ज बुश जीतेंगे जाहिर है कि ये सारी भविष्यवाणियाँ गलत निकलीं। तृतीय महायुद्ध अभी तक नहीं

हुआ। चन्द्रमा पर आदमी १९६९ में अमेरिका ने भेजा और १९९२ में बिल क्लिन्टन विजयी हुए। पर बात यही है कि इतनी सारी प्रचुर मात्रा में गलत भविष्यवाणियों के होते हुए भी लोग भविष्यवक्ताओं के घर का रास्ता नहीं भूलते और इसमें बड़े से बड़े पढ़े लिखे उच्च पदस्थ व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। इसलिए साधारण जनता तो बेवकूफ बनती ही है।

कुछ भविष्यवक्ताओं ने २०१३ के लिए भविष्यवाणियाँ कीं थीं जो अन्ततोगत्वा गलत साबित हुयीं। ये सभी भविष्यवक्ता विश्वस्तर के माने जाते हैं। कुछ उदाहरण देखिए:-

१. संयुक्त राज्य अमेरिका पर रासायनिक हथियारों से हमला।
२. न्यूयार्क पर परमाणु बम से आक्रमण।
३. वेटिकन सिटी व उसके पोप पर आक्रमण।
४. मलाला यूसुफ को २०१३ का नोबल पुरस्कार।

सभी जानते हैं कि ये भविष्यवाणियाँ असत्य निकलीं।

एक बड़ी अच्छी भविष्यवाणी ब्लेयर राबर्टसन ने की। जिनका कहना था कि २०१३ में अत्यधिक बड़ी संख्या में डायबिटीज का रोग गायब हो जायेगा। काश कि ऐसा होता परन्तु आंकड़े इसके विपरीत ही बोल रहे हैं। भारतीय ज्योतिषियों की बात करें तो सबसे पहले मैं जिक्र करना चाहूँगा बनारस के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी पं. सुधाकर द्विवेदी जी का, जिनका उल्लेख स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने अपने सत्यार्थ भास्कर में किया है। इन ज्योतिषी के यहाँ एक कन्या का जन्म हुआ। स्वयं बहुत बड़े ज्योतिषी थे उसकी जन्मकुण्डली बनायी और भविष्यकथन कर अपने अन्य ज्योतिषी मित्रों को भी भेजी। सभी का भविष्य कथन कन्या के उज्ज्वल भविष्य का था। उस कन्या का विवाह 'अटल सौभाग्य' के विश्वास के साथ पिता ने किया परन्तु विवाह के छह माह बाद ही वह विधवा हो गई। इस दुर्घटना की संभावना किसी भी ज्योतिषी को दूर-दूर तक नहीं थी। पिता इस अविद्या इतने त्रस्त हुए कि उन्होंने सदा के लिए यह व्यापार छोड़ दिया।

ठीक ऐसी ही स्थिति सिन्धिया सरकार के ज्योतिषी पं. बलदेव प्रसाद सिन्धिया, पं. सूर्यनारायण व्यास (उज्जैन) के साथ हुयी। उन्होंने भी फलित ज्योतिष को तिलांजलि दे दी। ज्योतिषियों द्वारा लगाए गए एकाध तीर जब तुक्का बन जाते हैं तो केवल उन्हीं की चर्चा मीडिया में होती है। दस में से एक सफलता की चर्चा और ९ असफलताओं का जिक्र भी न करना समाज में अन्धविश्वास को बढ़ाने में सहायक होता है।

एक और भारतीय प्रसिद्ध भविष्यवक्ता हैं जो कि अक्सर टेलीविजन पर आते रहते हैं उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने संजय गाँधी की मृत्यु, भारतीय जनता पाटी के अभ्युदय, गुजरात के भूकम्प और कारगिल युद्ध की भविष्यवाणी कर दी थी। उन्होंने यह भी भविष्यकथन किया था कि २००१ और २००२ के बीच कश्मीर की समस्या सुलझ जायेगी। २००४ में अटल बिहारी वाजपेयी के पुनः प्रधानमंत्री बनने का भविष्य कथन भी इन्होंने किया था। उन्होंने यह भी भविष्यकथन किया था कि २०१० से पहले अमेरिका में एक महिला राष्ट्रपति चुनी जायेगी। पर इन सभी असत्य भविष्यवाणियों की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। दस बातों में से दो तीन बातों का सही हो जाना निश्चितता के अन्तर्गत नहीं आता।

प्रायः अनेक अवसरों पर हम देखते हैं कि घटना घटने के बाद उसकी ज्योतिषीय व्याख्या ज्योतिषियों द्वारा की जाती है। पर यह व्याख्या ऐसी ही स्थितियों में सदैव क्यों नहीं लागू होती है, यह प्रश्न करना हम भूल जाते हैं। 'द एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन' के एक सम्पादक ने द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में लिखा कि विश्व युद्ध इस कारण हुआ क्योंकि १९३९ में शनि मेष राशि में था। इसका अर्थ यह हुआ कि जब भी शनि मेष राशि में हो तो युद्ध अवश्यम्भावी है। जानकारों के अनुसार १९०९ तथा १९६८ में भी शनि मेष राशि में था, तब ऐसी महायुद्ध जैसी घटना क्यों नहीं घटी।

विश्वभर में फलित ज्योतिष की वैज्ञानिकता को जाँचने के लिए अनेक शोध हो रहे हैं। ऐसे एक शोध में ज्योफ्रेडी ने भी फलित ज्योतिष को असार पाया।

बनारस के जिन ज्योतिषी जी की हमने चर्चा की है उन्हीं की तरह १७ वीं शताब्दी में फ्लेमस्टीड इंग्लैण्ड के राज ज्योतिषी थे। उन्होंने कई सालों तक यह कार्य किया अन्त में आत्मा में जो सच्चाई उनको लगी उसे मानते हुए उन्होंने भी फलित ज्योतिष को अलविदा कह दिया। उन्होंने एक पुस्तक लिखी जो प्रकाशित नहीं हुई परन्तु उनकी प्रस्तावना का सार हम इसी अंक में एक लेख के रूप में दे रहे हैं।

वस्तुतः फलित ज्योतिष न कोई विज्ञान है न इसके निश्चित सिद्धान्त हैं। अगर ईश्वर एक है उसकी व्यवस्था एक है तो किसी भी विज्ञान के नियम भी एक जैसे और सार्वभौम होने चाहिए। अगर भारत में २ और २ चार होते हैं तो रूस भी में २ और २ चार

होने चाहिए। परन्तु जहाँ तक फलित ज्योतिष का सवाल है भारत, चीन, इंग्लैण्ड, अमेरिका इन सबमें जन्म पत्रिका बनाने की पद्धतियाँ और उनके निर्वचन की पद्धतियाँ भी अलग-अलग हैं। जाहिर है निष्कर्ष भी एक जैसे नहीं होंगे। यह सारा व्यापार मानव मनोविज्ञान पर आधारित है। हम सभी अपना भविष्य जानना चाहते हैं और प्रायः अच्छा-अच्छा सुनना पसन्द करते हैं, इसलिए ज्योतिषियों ने भी यह पद्धति अपना ली है, प्रायः ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं जो ७० से ८० प्रतिशत लोगों पर फिट बैठ जाती है। साथ ही सकारात्मक भविष्यकथन की परम्परा भी इसी मनोविज्ञान के चलते बढ़ती जा रही है। इस प्रकार के कुछ उदाहरण देखिए:-

अ.आप परिवार को महत्व देने वाले व्यक्ति हैं, आप अपने व्यापार पर ध्यान देना चाहते हैं। **ब.**आप शीघ्र निर्णय लेते हैं परन्तु कई बार आपको निर्णय लेने में मुश्किल होती है। **स.** थोड़ी मेहनत अधिक करें सफलता निश्चित मिलेगी। **द.**आपके लिए मित्र बनाने का आज बहुत अच्छा दिन है। इत्यादि इत्यादि

आप किसी भी दिन का समाचार पत्र उठाकर देख लीजिए सभी राशियों के भविष्यकथन ऐसे लगेंगे कि वे आपके लिए ही किए गए हैं और उन भविष्यकथनों के समुच्चय का ७० फीसदी तो ऐसा होगा जिसे निश्चित रूप से आप अपने लिए ही समझेंगे। इसका एक बहुत ही बढ़िया उदाहरण १९७९ में फ्रेन्च सांख्यकी विशेषज्ञ माइकल गउक्लिन ने प्रस्तुत किया। उसने एक सौ पचास लोगों के हाथ में एक एक जन्म पत्रिका पकड़ा दी और उनसे कहा कि आप इसकी निश्चितता के आधार पर अंक दें। ९४ प्रतिशत लोगों ने कहा कि यह भविष्यकथन निश्चित रूप से उनका ही विवरण प्रस्तुत करता है। आपको जानकर हैरानी होगी कि माइकल ने एक ही जन्म पत्रिका सबके हाथ में दी थी और वह भी किसकी, खूनी शैतान डॉ.पेटियट की। तो यह फलित ज्योतिष की वास्तविकता है, अगर हम गहराई से निष्पक्ष रूप से विचार करें। इसलिए मैं यही कहूँगा कि फलित ज्योतिष के विषय में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में एकदम सटीक लिखा।

'जैसी यह पृथिवी जड़ है, वैसे ही सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें? ..... जैसा सूर्य चन्द्रमा की किरण द्वारा उष्णता, शीतलता अथवा ऋतुवत् कालचक्र का संबंध मात्र से अपनी प्रकृति के अनुकूल, प्रतिकूल सुख-दुःख के निमित्त होते हैं।' (ग्रहादि का सुख-दुःख के संदर्भ में मानव जीवन से मात्र इतना ही संबंध है भाग्य निर्धारण में इनका कोई हाथ नहीं) इस सत्य को गाँठ बाँध लें, अनेक प्रकार के दुःखों से बचाव हो जावेगा।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

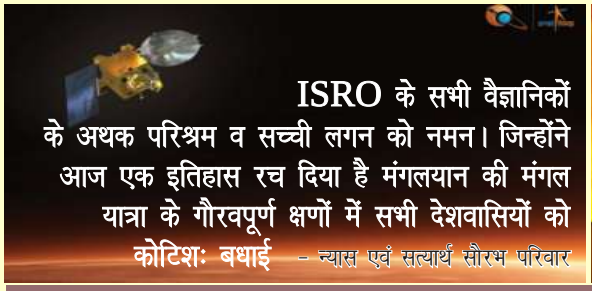

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के तत्त्वावधान में नव संकल्पित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) का शिलान्यास समारोह एवं राष्ट्र समृद्धि यज्ञ

शिलान्यास समारोह के कुछ खास बिन्दु

- २५०० नर-नारी बिना जातिभेद, लिंगभेद के एक साथ यज्ञ करने का केरल के लिए एक अद्भुत अनुभव था।
- एक स्वर एक वेशभूषा और सेना जैसे अनुशासन में अग्निहोत्र देखा दुनिया के हजारों आर्यजनों ने। अधिकतर आर्यजन परिवार सहित समारोह में पधारे हुए थे।
- विश्व के लाखों लोगों ने साधना एवं संस्कार चैनल पर देखा प्रसारण। यू-ट्यूब पर भी देखी जा सकती है कार्यक्रम की वीडियो।
- सम्पूर्ण कार्यक्रम की चित्रमय झांकी एवं वीडियो देखने के लिए लॉगऑन करें- www.thearyasamaj.org

जब देश में थी दीवाली महर्षि दयानन्द चले गए।

३० अक्टूबर १८८३ को दीवाली के दिन सायंकाल ५ बजे अजमेर, राजस्थान में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने प्राणों का परित्याग किया था। दीवाली के दिन एक ऐसी ज्योति ईश्वर रूपी महाज्योति के सान्निध्य में चली गयी जिसने कोटि-कोटि भारतीयों के हृदय को प्रकाशमान किया था। यह ज्योति आज भी हमारे हृदयों को प्रकाशमान कर रही है। 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो' यही अंतिम शब्द थे महर्षि दयानन्द सरस्वती के। ईश्वर की खोज के लिए घर का परित्याग

किया था दयानन्द ने। अपने लक्ष्य को प्राप्त करके वह अनन्त में विलीन हो गए। दीवाली के दिन महर्षि की इतनी याद आती है- ऐसा लगता है कि आज भी महर्षि हमारे आसपास हैं।

एक टीस सी दिल में उठती है,
एक दर्द सा दिल में होता है।
हम रात में उठ कर रोते हैं,
जब सारा आलम सोता है।

लौह पुरुष सरदार पटेल ने कितना सत्य कहा है कि जब बुराईयाँ घर कर जाती है तब ईश्वर

ऐसी विभूतियों को भेजता है। ऐसे महापुरुष कभी मरते नहीं हैं वे अमर होते हैं। आज भी महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने विचारों के कारण हमारे हृदय में हैं।

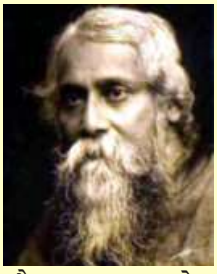

महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कितना ठीक कहा 'दीपावली की रात्रि में एक ऐसा दीपक बुझ गया जिसने भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त करके सत्य और पवित्रता की सरिता को प्रवाहित किया। मेरा सादर प्रणाम है उस महान् गुरुदेव दयानन्द जी को।'

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा कि 'महर्षि दयानन्द सचमुच युग प्रवर्तक महान् मनीषी क्रान्ति द्रष्टा अनाथों के नाथ, राष्ट्रीय आन्दोलन के सर्वप्रथम सूत्रधार थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत पड़ा। मैं जैसे-जैसे प्रगति करता हूँ वैसे वैसे मुझे महर्षि दयानन्द जी का बताया हुआ मार्ग दिखाई देता है।'

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई. में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। उनके जीवन काल में संपूर्ण हिन्दुस्तान के नगरों में आर्य समाज की शाखाएँ स्थापित हो गईं क्योंकि उन्होंने वैदिक संस्कृति 'फिर से अपनाओ' का सिंहनाद किया। जाति-पाँति, कर्मकाण्ड, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि सामाजिक बुराइयों का विरोध किया। सती प्रथा, बलि प्रथा आदि मिथ्या प्रथाओं को तिलांजलि देने की शिक्षा दी। नारी को गौरव, आदर, श्रद्धा, स्नेह और ममता की साकार प्रतिमा माना। ऋषियों, विद्वानों एवं सन्त पुरुषों को जन्म देने वाली जन्मदात्री समझा। महर्षि दयानन्द जी अपने उद्‌बोधन में बड़े गर्व से कहते थे कि जिस घर परिवार में नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। मूर्ति पूजा में अविश्वास लेकिन हवन यज्ञ में उनका पूर्ण विश्वास था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव को मानवता का उपदेश दिया। अहिंसा और सत्य का सच्चा अर्थ समझाया। बेलपत्र, पुष्प आदि बाहरी आडम्बरों को छोड़कर पूजा का वास्तविक अर्थ समझाया। विधवाओं को सिर मुँडवाने से श्वेत वस्त्र धारण करके माला जपने से नहीं बल्कि मर्यादा में रहकर जीने की शिक्षा दी। शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ करके हजारों लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। स्वराज्य प्राप्ति के लिए उन्होंने हजारों नवयुवकों-नवयुवतियों को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने का आह्वान किया। स्वदेशी के प्रबल समर्थक थे महर्षि दयानन्द। उनका यह स्पष्ट मत था कि वेद परमात्मा की

ही पवित्र प्रेरणा है। मानव कल्याण वेदों के अध्ययन तथा वेदमार्ग पर चलने से ही हो सकता है। इस प्रकार उनकी सत्यवाणी पूरे देश में गूँजने लगी। वेद पताका फहराने लगी। करोड़ों लोग उनके पदचिह्नों पर चलने लगे। जैसे सुकरात को विष का प्याला पीना पड़ा वैसा ही महर्षि दयानन्द सरस्वती के साथ हुआ।

दीपावली की रात को एक ऐसा दीप बुझा जिसने अपने जीवन काल में सुप्त हिन्दू समाज को गहरी नींद से जगाया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के निधन के बाद आर्य समाज का कार्य बड़ी तेज गति से आगे बढ़ा। आज आर्य समाज की देश-विदेश में हजारों शाखाएँ हैं। अनेक स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल, अनाथालय, विधवाश्रम, कल्याण केन्द्र, औषधालय, संन्यासाश्रम, सेवा केन्द्र, उपदेशक विद्यालय आदि हैं।

गया अन्धेरा, आँखे खोलो,
निर्भय होकर, वीरो बोलो
ऋषि दयानन्द ने अलख जगाई,
ओ३म् का जाप करो मेरे भाई।

- कृष्ण बोहरा, सेवानिवृत्त प्राचार्य
६४१-जेल ग्राउण्ड, सिरसा, हरियाणा

२१ वीं सदी में स्त्री समाज के बदलते सरोकार

गतांक से आगे .....

कृष्ण कुमार यादव

याद कीजिए बीबी हो तो ऐसी फिल्म में नायिका रेखा का घोड़ी पर सवार होकर दूल्हे के द्वार बारात ले जाना। इस फिल्मी कथानक को भी लड़कियों ने हकीकत में बदल दिया। संयोग से इसकी शुरूआत भी कर्मकाण्डों के लिए विख्यात बनारस से ही हुई यानी भोलेनाथ की नगरी में गंगा एक बार फिर उल्टी बही। इस सबके पीछे कश्यप फिल्म एंड टेलीविजन रिसर्च इंस्टिट्यूट के निदेशक डॉ. डी.एल.कश्यप की प्रमुख भूमिका रही। जिन्होंने अपने तीन बेटों और दो बेटियों के हाथ बनारस के घमहापुर गाँव में एक साथ ही मण्डप में पीले किये। अभी तक दहेजलोलुप दूल्हों को लड़कियों द्वारा विवाह मण्डप से बाहर निकालने या शराबी दूल्हे के साथ विवाह करने से इंकार करने जैसे उदाहरण ही सामने आये हैं पर परम्पराओं को दरकिनार करते हुए डॉ. कश्यप के तीनों बेटों से विवाह करने

उनकी दुल्हनें घोड़ी पर सवार होकर मय बारात उनके दरवाजे आयीं जहाँ दूल्हे के पिता ने बहुओं की अगवानी की तथा उन्हें घोड़ी से उतारकर उनके पाँव पूजे । जबकि परम्परा है कि लड़की का पिता दूल्हे के पाँव पूजता है। प्रतीकात्मक द्वारपूजा के बाद दुल्हनों को मंच पर महाराजा कुर्सी पर बिठाया गया और फिर दूल्हे राजा मंच पर आये। लड़की वालों की ओर से निभाये जाने वाले सभी रस्मोरिवाज लड़कों के पिता ने पूरे किये। इस विवाह में न तो कोई मंत्र पढ़ा गया और न ही सात फेरों के साथ कसमें खायी गईं। अपितु सिर्फ जयमाल व सिन्दूरदान हुआ। इसी प्रकार जयपुर में कानून की छात्रा रहीं दो जुड़वा बहिनें अपनी शादी के अवसर पर निकाली जाने वाली 'बिन्दौरी' में घोड़ी पर सवार होकर निकलीं। उनका मानना था कि यह क्रान्तिकारी कदम दर्शाता है कि हमारे समाज में लड़के-लड़कियों में कोई भेदभाव नहीं है। उत्तरप्रदेश के जौनपुर में जब शादी पश्चात् एक लम्बे समय तक पति अपनी विवाहिता को लेने नहीं पहुँचे तो कुछेक लड़कियाँ खुद ही बारात लेकर पतियों के दरवाजे पहुँच गयीं। यही नहीं आधी आबादी की प्रतीक नारियों ने अब अनचाहे दूल्हों को दरवाजे से लौटाना भी आरम्भ कर दिया है। गाय बछिया समझकर किसी के भी हाथ में पगहा पकड़ा देने वाले माता-पिता की पगड़ी की लाज के खातिर, सामाजिक संस्कारों के बोझ तले दबकर अपना भविष्य बर्बाद करने की बजाय तमाम लड़कियों ने दहेज लोभी, शराबी, उम्र दराज इत्यादि जैसे दूल्हों को निडरता से दरवाजे से लौटाने में संकोच नहीं किया।

सामान्यतः शादी योग्य लड़कियों के लिए लड़के ढूढ़ने का काम पुरुष वर्ग का माना जाता रहा है पर लखनऊ के अमीनाबाद में रहने वाली नीलम पाण्डे १९९६ से इस कार्य को सहजता से कर रही हैं और अब तक उन्होंने सैंकड़ों शादियाँ करवाई हैं। नीलम बेबाक रूप में स्वीकारती हैं कि वर्तमान परिवेश में शादी को लेकर सबसे बड़ी समस्या यह है कि दस काबिल लड़कियों पर मुश्किल से एक लड़का ढूढ़ने पर मिलता है।' शायद यही कारण है कि तमाम लड़कियों ने अब अयोग्य वरों को शादी के मण्डप से बाहर निकालना आरम्भ कर दिया है। दुल्हन के वेश में सजी-धजी बैठी ये लड़कियाँ किसी ऐसे व्यक्ति को जीवन साथी के रूप में नहीं चाहतीं, जो उनको व उनके परिवार को प्रतिष्ठाजनक स्थान न दे सके या दहेज की आड़ में धनलोलुपता का शिकार हो। अब तो कुछ ऐसे भी मामले सामने आ रहे हैं। जहाँ एक लड़की अन्नपूर्णा ने स्वयंवर द्वारा अपना पति चुना। ८वीं पास २२ वर्षीया अन्नपूर्णा द्वारा स्वयंवर रचा कर वर चुनने की योजना का शुरू में समाज में काफी विरोध हुआ लेकिन समाज की परवाह किए बिना वह अपने रास्ते चलती रही। आखिरकार समाज भी साथ हो गया। स्वयंवर के प्रचार के लिए बाकायदा इलाके में पोस्टर लगाए गए और पास-पड़ौस के

गाँवों में डुग्गी और लाउडस्पीकार के जरिए भी लोगों को इसकी जानकारी दी गई थी। स्वयंवर में शामिल होने वाले युवाओं की अधिकतम आयु २६ साल तय की गई थी। अन्नपूर्णा से विवाह के इच्छुक लोगों को उसके पाँच धार्मिक सवालों का जवाब देना था। हल्बा आदिवासी समुदाय के युवकों को ही इसमें शामिल होने की अनुमति थी। स्वयंवर में केवल तीन युवक ही शामिल हुए। इनमें मात्र १२ वीं पास और पेशे से किसान घनाराम ने स्वयंवर में पूछे सभी पाँच सवालों के सही जवाब दिए और अन्नपूर्णा ने इस व्यक्ति को अपने जीवन साथी के रूप में चुना।

वक्त के साथ पुरानी परम्पराएँ टूटती हैं और नयी परम्पराएँ स्थापित होती हैं। आन्ध्रप्रदेश का तिरूपति बालाजी मंदिर पूरे विश्व में विख्यात् है और हर दिन यहाँ बेशुमार लोग भगवान बालाजी को अपने केश अर्पित करने आते हैं। इनमें अच्छी खासी तादाद महिलाओं की होती है

और एक लम्बे समय से मंदिर में महिला मुण्डनकर्मियों को बिठाने की माँग उठती रही है। ३१ मार्च २००५ को एक लम्बे संघर्ष के बाद नाईनों को यहाँ नियुक्त करने का फैसला किया गया। इसके बाद तो इस निर्णय को भी धार्मिक आस्थाओं से जोड़कर देखा जाने लगा और तर्क दिया गया कि प्रतीकात्मक रूप से स्त्रियाँ देवी लक्ष्मी की प्रतिनिधि हैं इसलिए उन्हें मुण्डन कर्म नहीं करना चाहिए क्योंकि यह कृत्य उनकी दरिद्रता को दर्शाता है। पर नाईनों ने हार नहीं मानी और तर्क दिया कि इस कार्य से उन्हें रोजगार मिलेगा और उनकी दरिद्रता व गरीबी दूर हो सकेगी। यही नहीं कर्म के आधार पर पुरुष नाईयों से अपने को कमतर नहीं आँकने वाली इन महिलाओं ने यह भी कहा कि उनसे बाल उतरवाने वाली महिलाएँ अपने को ज्यादा सहज महसूस कर सकेंगी। समाज की दकियानूसी परम्पराओं के चलते जहाँ अभी भी दलितों के घरों में पूजा पाठ व धार्मिक अनुष्ठानों हेतु पंडित ढूढ़े नहीं मिलते वहाँ बरेली के भमोरा इलाके की आशा और ज्योति नामक दो बहनें तमाम दलित और मलिन बस्तियों में जाकर अनुष्ठान करती हैं और इस कार्य से मिलने वाले धन को गरीब लड़कियों की शादी, भंडारा या किसी पीड़ित व्यक्ति की सेवा पर खर्च कर देती हैं।

राजस्थान सदैव से सामन्ती समाज माना जाता रहा है पर उस सामन्ती समाज की विधवाओं ने उन अमानवीय सामाजिक रूढ़ियों को दुत्कारने का साहस दिखाया है, जहाँ सती प्रथा जैसी बुराइयों के महिमा-मण्डन के जरिए विधवाओं से जीने का हक तक छीना जाता रहा है। यह वही राजस्थान है जहाँ १९८७ में देवराला सती काण्ड के दौरान सती रूपकंवर के चबूतरे पर चूड़ियाँ और सिन्दूर चढ़ाने की स्त्रियों में होड़ सी मची थी। अब उसी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में एकल नारी शक्ति संगठन के नेतृत्व में वैधव्य जीवन जी रही हजारों स्त्रियों ने उन साज शृंगारों का इस्तेमाल करना आरम्भ कर दिया है जो विधवा होते ही समाज उनसे छीन लेता है। हाथों में मेहन्दी, कलाईयों में रंग-बिरंगी चूड़ियाँ, माथे पर बिंदिया और खूबसूरत परिधानों के साथ ये विधवाएँ मांगलिक कार्यों में बढ़-चढ़कर अपनी सहभागिता दर्ज करा रही हैं।

मुस्लिम समुदाय में जहाँ काजी का काम पुरुष के बूते ही माना जाता रहा है, एक नारी ने पुरुषों का वर्चस्व तोड़ दिया है। पश्चिम बंगाल के पूर्वी मिदनापुर जिले के गाँव नंदीग्राम की काजी शबनम आरा बेगम इस देश की पहली महिला काजी हैं। शबनम के काजी बनने की कहानी भी कम रोचक नहीं। अपने काजी पिता की सातवीं बेटी शबनम ने पिता के लकवाग्रस्त हो जाने पर निकाह कराने में उनकी मदद करना आरम्भ किया। शरीयत का अच्छी तरह इल्म हो जाने पर पिताजी ने उसे नायब काजी बना दिया। सन् २००३ में पिता जी की मौत के बाद शबनम ने अपने पैरों पर खड़े होने हेतु काजी बनने का रास्ता चुना और संयोग से काजी के

रूप में उनका पंजीयन भी हो गया। पर काजी बनने के बाद शबनम की असली दिक्कतें आरम्भ हुईं। अंततः धमकियों और मुकदमों के बीच शबनम अपने को काजी पद के योग्य साबित करने में सफल हुई। इसी प्रकार लखनऊ में अगस्त २००८ में भारतीय मुस्लिम महिला आन्दोलन की अध्यक्ष नाइश हसन और दिल्ली के इमरान का निकाह एक महिला काजी डॉ.सईदा हमीद ने पढ़ाया। गौरतलब है कि डॉ.सईदा हमीद योजना आयोग की सदस्य भी थीं।

२१ वीं सदी में जब महिलायें पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं, ऐसे में सामाजिक व धार्मिक रूढ़ियों की आड़ में उन्हें गौण स्थान देना जागरूक महिलाओं के गले के नीचे नहीं उतर रहा है। यही कारण है कि ऐसी रूढ़िगत मान्यताओं और परम्पराओं के विरुद्ध उन्हीं क्षेत्रों से सामाजिक बदलाव की बयार चली है, जिन्हें इन रूढ़िगत कर्मकाण्डों का गढ़ माना जाता रहा है। इस सामाजिक बदलाव का कारण जहाँ महिलाओं में आई जागरूकता है,जिसके चलते महिलायें अपने को दोयम नहीं मानतीं और कैरियर के साथ-साथ सामाजिक परम्पराओं के क्षेत्र में भी बराबरी का हक चाहती हैं। वर्षों से रस्मो रिवाज के दरवाजों के पीछे शर्मायी सकुचायी सी खड़ी महिलाओं की छवि अब सजग और आत्मविश्वासी व्यक्तित्व में तब्दील हो चुकी है। आधुनिक महिलाएँ इस तर्क को बेबाकी से खारिज करती हैं कि पुण्य कमाने के क्षेत्र में ईश्वर ने पुरुषों को ज्यादा अधिकार दिए हैं। ऐसे तर्कों को वे पुरुष प्रधान पितृसत्तात्मक समाज की सोच मात्र मानती हैं। उनके लिए सवाल अब परम्पराओं का ही नहीं वरन् उनकी कसौटी पर खरे उतरने का भी है। मात्र किसी धार्मिक ग्रन्थ के उद्धरणों के आधार पर नारी-शक्ति को दबाया नहीं जा सकता। अब ये महिलायें पूछने लगी हैं कि पुण्य के कामों के समय हाथ पर बाँधा जाने वाला कलावा लड़कों के दायें और लड़कियों के बायें हाथ पर क्यों बाँधा जाता है, क्यों नहीं दोनों के एक ही हाथ पर बाँध दिया जाता है? यदि पूजा पाठ या पुण्य के कार्य कराने के लिए जनेऊ धारण करना शास्त्रों में जरूरी माना गया है तो पुरोहित का कार्य करने वाली महिला जनेऊ क्यों नहीं धारण कर सकती? योग्यता चाहे वह पुरुष की हो अथवा महिला की बराबर ही कही जायेगी। जहाँ प्रकृति पुरुष-स्त्री को बिना किसी भेदभाव के बराबर धूप छाँव बाँटती हो वहाँ धर्म या परम्परा की आड़ में अतार्किक आधार पर स्त्रियों को तमाम सुविधाओं से वंचित करने को उचित नहीं ठहराया जा सकता। कोई महिला यदि किसी क्षेत्र में जाना चाहती है तो मात्र इसलिए कि वह एक महिला है, उसको उस क्षेत्र में जाने से नहीं रोका जा सकता। आखिर अपनी पसन्द का क्षेत्र चुनने का सभी को अधिकार है। यह निर्णय करने का समय आ चुका है कि अज्ञानी एवं अल्पज्ञानी पुरुषों के भरोसे धर्म की सनातन परम्परा और उसके आचार-विचार सुरक्षित रहेंगे या शिक्षित-प्रशिक्षित नारियों के हाथ में उसकी पताका महफूज रहेगी? प्रख्यात् ज्योतिषी के.ए.दुबे पद्मेश जैसे विद्वान् भी इन छात्राओं के कदम से उत्साहित दिखते हैं और इससे प्रेरित होकर अपना उत्तराधिकारी किसी नारी को ही बनाना चाहते हैं। यहाँ तक कि भारत में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे दलाई लामा भी आपने उत्तराधिकारी के रूप में महिला की आशा करते हैं। फर्क मात्र इतना है कि आजादी के दौर में भी कुछ महापुरुषों ने इन रूढ़िगत सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध आवाज उठायी थी पर २१ वीं सदी के इस दौर में महिलायें सिर्फ आवाज ही नहीं उठा रही हैं वरन् इन रूढ़िगत मान्यताओं को पीछे ढकेलकर नये मानदण्ड भी स्थापित कर रही हैं।

निदेशक डाक सेवाएँ, इलाहबाद परिक्षेत्र,
इलाहबाद, उत्तरप्रदेश २११००१
मोबाइल ०८००४९२८५९९

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज राजगढ़ के निर्वाचन

आर्य समाज मंदिर, राजगढ़, अलवर के वार्षिक निर्वाचन दिनांक १३ जुलाई २०१४ को श्री सत्येन्द्र सैनी के निर्देशन में सम्पन्न हुए। श्री धर्मसिंह आर्य, श्री गोपाल सिंह आत्रेय, श्री कुलदीप सिंह क्रमशः प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के पद पर निर्वाचित हुए। न्यास परिवार एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

A preface on the vanity of astrology and astrological practice

Seven years ago I began to study astrology at the urging of a friend well versed in it, for at the time I was much persuaded of its certainty. He lent me several books that encouraged my belief that astrology was useful and worth studying. I quickly learnt the fundamentals and tested my skill on the charts of myself and friends, using the dates of notable accidents to correct the birth time by the method of directions. However, I found that when the chart fitted these particular accidents it would either fail to describe the person or would fail to fit other accidents.

At first I thought the fault might lie in the arcs of direction, which differed according to author (eg Ptolemy, Kepler, Naibod). So I tried them all very carefully on ten charts and found that none of them worked accurately. This made me doubt sometimes the charts, more often my own skill, but rarely the authors or astrology. So I checked again the various books, and found great differences (eg. in rulerships) between our astrologers and the Arabian professors. This made me cautious.

I soon found that when astrologers found no direction in a corrected chart to match a notable accident, they referred to other indications such as that year's revolution, seizing on whatever could be made to match the accident despite better arguments to the contrary. And that when they proclaimed the truth of their predictions, they ignored any aspects, directions or transits that failed to show accidents.

Also, if the case could not fairly be proved, they pointed to defects in their ability, or to needing more time to consult their books, rather than acknowledge the least error in astrology. But it is a miracle if the case cannot be proved, because astrologers have so many rules, and so many aspects, transits, directions, revolutions, and progressions to consider, and so many ways of considering them, that it is impossible not to find something that matches the event even though it is hard to see why the contrary indications should be overpowered. **But if even that approach fails, they say that God has overruled the stars.**

These failures were one of the reasons that caused me to stop studying astrology and reject it as false. A more important reason was the absence of any way that the planets could influence our actions and thoughts. **Thus it was impossible to see how their rays meeting in trine or quartile should be either beneficial or harmful; or how the sun could be more strong in one part of the heavens than another; my experience is that persons with well-placed planets do not attain more than those with ill-placed planets.** Also, astrological predictions of the weather

जान फ्लेमस्टीड ब्रिटेन के प्रथम राज्य ज्योतिषी थे। उन्होंने स्वयं फलित ज्योतिष पर बहुत कार्य किया परन्तु उसे 'असत्य' पाया। उनकी अप्रकाशित रचना की प्रस्तावना पाठकों के लाभार्थ/विचारार्थ प्रस्तुत है। -संपादक

are no less ridiculous, for the aspects on which they are based apply as much to Egypt or America as they do to England. Indeed, so small is the verity of astrology that even astrologers do not agree on where it lies. Thus William Ramsey (Astrologia Restaurata 1653) says it lies with elections while William Lilly (Christian Astrology 1647) says it lies with horary (he makes his living by them), but John Gadbury (Genethlialogia1658) laughs at both, thinks that elections are a vanity and horary uncertain, and says it lies with nativities, **which I can disprove with one of his own examples of a famous person where, if the name of the person were concealed, the chart would be judged as indicating an idiot rather than a famous person.**

Mr Gadbury's cunning in covering the faults of his art is superlative. Most of his charts are of deceased persons, in which having chosen a birth time giving directions for the most notable accidents, he counts this with no little pomp as mightily pronouncing the truth of astrology, all the while concealing how much his corrected time differs from the observed time. But he is more sparing of his predictions for living persons lest the event not occur, and with good reason -- **he predicted danger of death in 1661 for the King of Sweden (or 1663 if he should escape 1661), certain death in 1660 for the Prince of Orange, and the same in 1667 for the Duke of York, yet today (1674) all three are still alive and well.**

Even if we grant the planets some influence, we must still ask how astrologers can be confident of their judgments when they do not agree on which house system to use, nor on how to use fixed stars. They agree that the stars do have an influence, and some pretend to use them when everything else fails, but they never consider their aspects, which may contradict what is promised by planetary aspects. So how can we be certain of the truth of their predictions?

And tell me, reader, how it is possible that the planets, reflecting only a small part of the sun's light, should have more effect on us than a good fire or candle, which despite their superior light and heat have not the influence on our thoughts and actions that the astrologer says comes from the stars.

Since astrology finds no natural grounds to sustain it, and since experience shows us its falsehood, I hope my readers will withdraw any credit they may have given to this imposture. As for astrologers, I have no hope of reforming them because their profession -- no matter how foolish and opposite to reason -- is too lucrative. My reward for this plain speaking will no doubt be the title of "ignorant and peevish".

bstract Unlike modern scientists, most of whom have little knowledge of astrology, John Flamsteed (1646-1719), the first astronomer royal, was well acquainted with astrology, its literature, and astrologers. His criticism was based on several years of personal experience in reading charts and putting astrology to the test, and is thus of some interest. His points (the disagreement on basics, the endless nonfalsifiability, the absence of a mechanism) still apply today. Flamsteed's 1674 writing style is necessarily archaic and wordy, so his criticism has been condensed using a more modern style to just under 25% of its length.

- साभार- अन्तर्जाल

उपहार स्वरूप कलैण्डर देने की तिथि बढ़ाई गई

दिसम्बर १४ तक सत्यार्थ सौरभ के आजीवन सदस्य बनने वालों को १००रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर उपहार स्वरूप दिया जावेगा (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला)। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया गया है।

भारत के जगद्गुरु होने के अर्थ व उपाय क्या हैं?

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

गतांक से आगे .....

अब हम विचार करते हैं कि इस सबका मूल कारण क्या था? वस्तुतः हर देश व समाज को उत्कर्ष वा अपकर्ष तक पहुँचाने में सबसे बड़ा योगदान शिक्षा प्रणाली का ही होता है। उस समय सभी प्रकार का सदाचार ज्ञान, विज्ञान व तकनीक वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, दर्शन, उपनिषदों से ही उत्पन्न थी। ऋषि भगवन्त साधना के द्वारा सृष्टि के सूक्ष्म रहस्यों तथा ब्रह्माण्ड में विचरती वेद की ऋचाओं के रहस्यों को प्रकट करके उन्हें प्रयोगात्मक रूप देकर नाना प्रकार की दिव्य तकनीक को जन्म देते थे। वे जहाँ उच्च कोटि के योगी, तपस्वी हुआ करते थे, वहीं वे अनेक शस्त्रास्त्र व विमान विद्या में पारंगत होकर राष्ट्र व विश्व की सम्पूर्ण परिस्थिति पर सूक्ष्म दृष्टि रखकर क्षत्रियों को पूर्ण मार्गदर्शन व शस्त्रास्त्र प्रदान करते थे। उस समय वेदादि शास्त्रों को समझने की जो परम्परा थी, वह महाभारत के पश्चात् मानो लुप्त हो गयी और धीरे-२ वेदार्थ करने की परम्परा के स्थान पर केवल वेदपाठ मात्र आजीविका का साधन बन गया। हाँ, यह भी बात सत्य है कि वेदपाठियों ने भी वेद को अब तक सुरक्षित रखा, इसलिए सम्पूर्ण मानवजाति उनकी भी ऋणी है। वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, अरण्यक ग्रन्थ आज भी इस देश में विद्यमान हैं परन्तु इनको समझने की परम्परा लुप्त हो जाने से कोई विद्वान् भाष्यकार प्राचीन ऋषियों के ज्ञान विज्ञान व तकनीक को संकेत मात्र भी जान नहीं पाया है। वेद भाष्यकारों में केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती ही ऐसे दिखायी देते हैं, जिन्होंने महाभारत के बाद लुप्त वेदार्थ की परम्परा को समझा परन्तु समयाभाव के कारण वे अपना वेदभाष्य सांकेतिक ही कर सके। उन्होंने अपने सत्यार्थ प्रकाश में न केवल आर्यावर्त (भारतवर्ष) के वर्तमान पतन के साथ प्राचीन ऐश्वर्य का वर्णन किया है अपितु वैदिक आर्ष विद्या का ऐसा पाठ्यक्रम भी प्रस्तुत किया है, जिसके आधार पर भारत पुनः सच्चा जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र बन सके परन्तु दुर्भाग्य यह है कि इस पाठ्यक्रम को न तो पढ़ने वाले रहे,न पढ़ाने वाले और न ही इन शास्त्रों के गूढ़ रहस्य को समझने समझाने की वह वैज्ञानिक पद्धति, आत्म साधना व तप ही रहे, जो इन शास्त्रों को समझ कर विश्व के आधुनिक विज्ञान की चकाचौंध को अपने वैज्ञानिक उत्कर्ष से प्रभावित व मार्गदर्शित कर सके। कहीं-२ कुछ गुरुकुलों में कुछ ग्रन्थों का पठन-पाठन चल रहा है परन्तु प्रतीत होता है कि इस परम्परा का बाह्य आवरण मात्र शेष है, अन्दर से नितान्त रिक्तता है, अन्यथा वेदविद्या विज्ञान आज कुछ तो करके दिखाता। इस अभागे हिन्दू समाज ने तो वेद के स्थान पर केवल गीता वह भी पाठमात्र, वाल्मीकिरामायण के स्थान पर रामचरित मानस, सच्चे पुराण शतपथ-ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के स्थान पर भागवत आदि नवीन पुराणों को ही अपने धर्म व विद्या के ग्रन्थ मान लिया। उस पर पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली, खानपान, वेषभूषा, जीवनशैली का ऐसा रोग लगा कि स्वदेशीय स्वाभिमान, धर्म, संस्कृति एवं विद्या सब भस्म हो चुके हैं। तब माननीय प्रधानमंत्री जी! कैसे जगद्गुरु बनायेंगे, आप इस देश को? अस्तु।

महर्षि दयानन्द के पश्चात् आर्य समाज के एक विद्वान् पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर ने वैदिक विज्ञान की परम्परा को समझने का प्रयास किया और अपने साहित्य में कुछ संकेत भी दिये। यदि इन दोनों विद्वानों को छोड़ दें तो आचार्य सायणादि के वेद भाष्य के आधार पर कोई प्राचीन वैदिक ज्ञान विज्ञान जानकर भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न देखता है, तो वह दिवास्वप्न ही हो गा। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि इन भाष्यकारों ने वैदिक ज्ञान विज्ञान का विनाश करके पशुबलि, हिंसा, यौन अपराध, मांसाहार आदि को इस संसार में फैलाने में भारी योगदान दिया है। वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों का विज्ञान समझना आज असम्भव सा हो गया है। महर्षि दयानन्द के कुछ काल पश्चात् जयपुर के राज पण्डित पं.मधुसूदन ओझा एवं पं.मोतीलाल शास्त्री ने ब्राह्मण ग्रन्थों पर विशाल साहित्य रचा परन्तु रहस्यमय विज्ञान के नाम पर लिखा गया, उनका सम्पूर्ण वाङ्मय विज्ञान से सर्वथा शून्य है क्योंकि पं. मोतीलाल शास्त्री ने स्वयं अपने ग्रन्थ 'दिग्देशकालस्वरूप मीमांसा' पुस्तक के पृष्ठ ४३७ पर आचार मीमांसा प्रकरण में

लिखा है- 'वैदिक विज्ञान का आज के भूत विज्ञान से कुछ भी तो साम्य नहीं है।" यह बात तो उचित है कि वैदिक विज्ञान की परम्परा व क्षेत्र वर्तमान विज्ञान से कुछ पृथक् है परन्तु कोई भी साम्य न होना यह दर्शाता है कि ऐसा वैदिक विज्ञान न तो कभी प्रयोगात्मक हो सकता है और न ही कभी इसका ब्रह्माण्ड के विषय में हो रहे विभिन्न प्रेक्षणों व अनुसंधानों से कोई सम्बन्ध है, तब इससे कोई तकनीक विकसित करना तो सर्वथा दूर की बात है। ऐसी स्थिति में वैदिक भूत विज्ञान क्या केवल वाग्विलास की वस्तु है वा ग्रन्थों की शोभा व मिथ्या आत्म प्रशंसा, वेद प्रशंसा व भारतीय ज्ञान विज्ञान की मिथ्या कथा का साधन? तब इस कोरे कल्पित विज्ञान का मानव जीवन के लिए क्या उपयोग है? यदि वैदिक विज्ञान यही है तो उसे मानने व जानने का कोई अर्थ ही नहीं है। मेरी दृष्टि में हर विज्ञान तीन चरणों में विकसित होता है-

१. मूलभूत भौतिक विज्ञान

२. प्रयोगात्मक व प्रेक्षणात्मक विज्ञान

३. तकनीक में परिवर्तित विज्ञान।

मानवजाति के प्रत्यक्ष उपयोग में आने वाला तकनीकी विज्ञान ही है परन्तु इनकी जड़ मूलभूत विज्ञान ही है और तना, शाखा व पत्तियाँ हैं, प्रयोग व प्रेक्षण में उपयुक्त होने वाला विज्ञान। यदि कोई विद्या इन तीनों में से एक भी श्रेणी में नहीं आती है तो वह पदार्थ विद्या कहाने योग्य ही नहीं है। इसी कारण मैंने वैदिक विज्ञान की लुप्त परम्परा को खोजने व समझने का बीड़ा उठाया है। मैं आधुनिक भौतिक विज्ञान को भी समझने का यत्न कर रहा हूँ। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई एवं टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्टल रिसर्च, मुम्बई में वर्षों से जा जाकर तथा आधुनिक भौतिक विज्ञान की उच्च स्तरीय पुस्तकों का अवलोकन करके वर्तमान भौतिक विज्ञान की समस्याओं, न्यूनताओं को जानने का प्रयास किया है। जोधपुर की रक्षा प्रयोगशाला एवं राष्ट्रिय भौतिकी प्रयोगशाला दिल्ली के निदेशक स्तर के भौतिकविदों से व्यापक चर्चा की है। सौर वेधशाला उदयपुर एवं इण्डियन सायंस एकेडमी के भौतिक विज्ञानियों की पर्याप्त संगति की है। भारत के विशेष प्रतिभाशाली सृष्टि विज्ञानी प्रो. ए.के. मित्रा, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई से पिछले दस वर्षों से सतत सम्पर्क रहा है। उनके अनुसंधान व मेरे विचार कई दृष्टि से मिलते भी रहे हैं। इस कारण वे मुझसे बहुत निकट व आशा भी रखते हैं। अन्य भी कई प्रख्यात् वैज्ञानिक मुझसे आश्वस्त हैं। मैंने निष्कर्ष यह निकाला है कि वर्तमान भौतिक विज्ञान अत्यन्त विकसित होते हुए भी अनेक गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त है। बिग बैंग मॉडल, ब्लैक होल, क्वाण्टम फिजिक्स, गुरुत्व बल, स्पेस, टाइम, बल की अवधारणा,

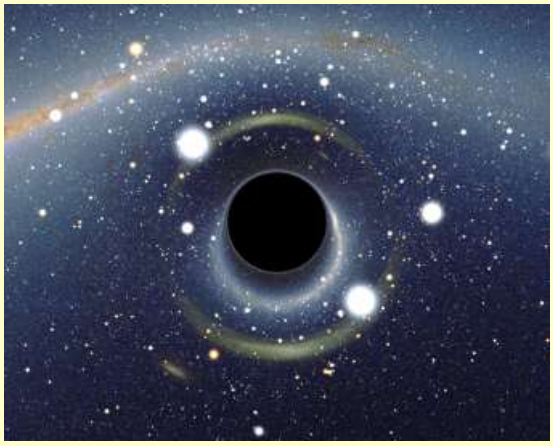

फैलता ब्रह्माण्ड तथा मूल कण ये गम्भीर समस्याएँ हैं। पता नहीं क्यों संसार भर का मीडिया भी बिग बैंग मॉडल व ब्लैक होल तथा स्टीफन हॉकिंग को इतना महत्व देता है?भारतीय खगोलशास्त्री डा. ए.के.मित्रा ने सन् २००४ में ही ब्लैकहोल का खण्डन किया तथा मैंने भी ब्लैक होल विशेषकर बिग बैंग का खण्डन २००४ में किया। हॉकिंग साहब को पत्र भी भेजे। मित्रा साहब के अनेक लेख भी प्रकाशित हुए उन्होंने ब्लैकहोल के स्थान पर ईको मॉडल स्थापित किया परन्तु भारतीय मीडिया भी शान्त रहा। अन्त में स्टीफन हॉकिंग ने कहा ब्लैक होल नहीं होता तो भारतीय मीडिया भी बोल उठा। मैंने हॉकिंग को पत्र लिखा, उसकी कापी भारतीय मीडिया तथा अनेक देशों के वैज्ञानिकों को दी गयी परन्तु कोई प्रभाव नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि यूरोपियन मेडीकल सायंटिस्ट (Gergel Furjes MD, Faculty of Public Health, University of Debrecen, Hungary) ने कहीं से मेरे हॉकिंग के नाम पत्र पढ़कर कुछ सेकेण्ड में ही अपनी सहमति दर्शाते हुए पत्र लिखा। यदि ए. के. मित्रा विदेश में होते तो उन्हें कदाचित् नोबल पुरस्कार मिल गया होता परन्तु अपना तो देश इण्डिया है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि भारत में भारतीयों का सम्मान है ही नहीं। हाँ, अब श्री मोदी जी के नेतृत्व से मित्रा जी को भी आशा है और मुझे भी कि भारतीय स्वाभिमान जीवित होगा।

पाठकगण! मैं विशुद्ध वैदिक विज्ञान की बात कर रहा हूँ, रामायण, महाभारत कालीन वैदिक विज्ञान व टैक्नोलोजी की बात कर रहा हूँ। तब मेरी बात वर्तमान परिवेश में समझ में आना अत्यन्त दुष्कर लगता है। आज रामायण व महाभारत के विज्ञान को भारत का अधिकांश प्रबुद्ध वर्ग कल्पना मान रहा है। दुर्भाग्य यह है कि कुछ कथित वैदिक विद्वान् भी इन्हें कहानियाँ ही मान रहे हैं। हाँ, यह बात भी सत्य है कि इन ग्रन्थों में कुछ ऐसे प्रक्षेप भी हैं, जो इन ग्रन्थों को कल्पित व

दूषित सिद्ध करते हैं परन्तु हर अज्ञेय बात को प्रक्षेप बताने का भी रोग बढ़ता जा रहा है। जब तक मैं वैदिक विज्ञान के कुछ सिद्धान्तों को प्रतिपादित करके वर्तमान विज्ञान की कुछ गम्भीर समस्याओं को नहीं सुलझा दूँगा, तब तक मेरी बातों पर यह देश कभी विश्वास नहीं करेगा, फिर विदेशी तो कैसे करेंगे? इस कारण मैं आज देशवासियों को विश्वास दिला रहा हूँ कि वर्तमान विकसित भौतिक विज्ञान की उपर्युक्त समस्याओं का समाधान वैदिक विज्ञान से हो सकेगा, मुझे ऐसा ईश्वर कृपा से विश्वास है। वैदिक विज्ञान अनुसंधान लुप्त परम्परा को मैंने ईशकृपा से खोज लिया है, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं अभी ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य कर रहा हूँ, जो सम्भवतः विश्व में प्रथम बार हो रहा है। यदि किन्हीं महानुभाव को ऐतरेय ब्राह्मण के किसी अन्य वैज्ञानिक (आधिदैविक) भाष्य की जानकारी हो तो देने की कृपा करें। भाष्य पूर्ण होने से पूर्व कुछ भी प्रकाशित वा उद्घाटित नहीं करूँगा। उसके पश्चात् मैं भारत सरकार विशेषकर प्रधानमंत्री जी से मिलकर बताना चाहूँगा कि भारत जगद्गुरु ऐसे वैदिक विज्ञान द्वारा मार्गदर्शित उच्च विकसित वर्तमान विज्ञानादि विद्याओं के आधार पर बनेगा, जिससे हम वर्तमान अत्यन्त विकसित मूलभूत भौतिक विज्ञान की गम्भीर समस्याओं का समाधान कर सकें। जिसके आधार पर वर्तमान विज्ञान के ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण भी संशोधित किये जा सकें। सृष्टि उत्पत्ति, परमाणु व कण भौतिकी के कई रहस्य सुलझ सकें। काल-स्पेस-बल-ऊर्जा के रहस्य उद्घाटित हो सकें। मुझे विश्वास है कि ईशकृपा से अनुकूलता रही तो आगामी ३-४ वर्षों में इस कार्य की नींव रख दूँगा, फिर भारत सरकार चाहे तो उस पर महल खड़ा करने हेतु इस महत्वाकांक्षी योजना को अपना कर प्रधानमंत्री जी के भारत को जगद्गुरु बनाने तथा मानव संसाधन विकास मंत्राणी श्रीमती स्मृति ईरानी के वेदादि शास्त्र पढ़ने के स्वप्न को साकार कर सकें। ध्यातव्य है कि मेरे यह सब लिखने का अर्थ यह नहीं कि आधुनिक विज्ञान का अध्ययन बंद कर दिया जाये। नहीं-२ यह अध्ययन और भी उच्च स्तर पर हो और प्रतिभाशाली वैज्ञानिक ही प्रतिभाशाली वैदिक विज्ञानियों के साथ मिलकर वैदिक साहित्य का अध्ययन करें, तभी वैदिक विज्ञान प्रकाशित होगा। मेरे ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य को अनेक वैदिक विद्वान् समझ ही नहीं पाते हैं जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा. एम. एम. बजाज जिनकी मैडी-फिजिक्स क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति है, मेरे पास पधारे तो मेरे भाष्य के दो पृष्ठ खड़े-२ पढ़ कर तत्काल ही बहुत कुछ समझ गये। इस कारण मेरा

मत है कि मेरे भाष्य को भौतिक विज्ञानी एवं वैज्ञानिक प्रतिभा के धनी अध्यात्मवेत्ता ही समझ पायेंगे। उस समय कोई कथित सैक्यूलरवादी वा नास्तिक कोई भी ऐसे वैदिक विज्ञान का विरोध नहीं कर सकेगा, तब हम संसार को भगवान् मनु के शब्दों में कह सकेंगे-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ - मनु. २/२०

अर्थात् संसार के लोगों को चरित्र व विज्ञान की शिक्षा लेने हेतु भारतीयों के पास आना चाहिए।

- वेद विज्ञान मन्दिर, भागल भीम, भीनमाल
चलभाष- ०९४१४१८२१७३

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

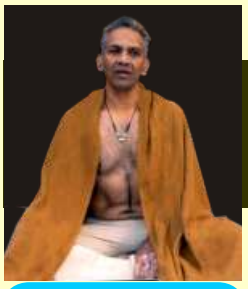

दयानन्द एक, व्यक्तित्व अनेक

योगाचार्य डॉ. नरेन्द्र सनाढ्य

जो लोग महर्षि दयानन्द सरस्वती को केवल समाज सुधारक मानते हैं वे बहुत बड़ी भूल करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती उन्नीसवीं शताब्दी के महान् समाज सुधारक, परम वेदज्ञ, उच्च कोटि के योगीराज, उत्कृष्ट ब्रह्मचारी, परम दार्शनिक, देशभक्त, तर्क-शिरोमणि, निर्भीकता की अद्वितीय मिसाल, दया और आनन्द का मिश्रण, साहस व धैर्य के जीवंत उदाहरण थे। आईये उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालें एवं चित्रपूजा से अस्पृश्य रहते हुए चरित्रपूजा करते हुए उनके जीवन चरित्र से शिक्षा ग्रहण कर अज्ञानता के अंधेरे को दूर करें।

१. योगिराज दयानन्द- महर्षि दयानन्द सरस्वती महर्षि पतंजलि के योगदर्शन को ही वास्तविक योग मानते थे। हठयोग को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने ६ वर्ष तक एकान्त में महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग की साधना की। उनका यह मानना था कि दौलत व शोहरत के लिए योग से प्राप्त सिद्धियों का प्रदर्शन कभी नहीं करना चाहिये। इसीलिये पूर्ण योगी बन जाने के बावजूद उन्होंने कभी अपनी योगशक्ति व सिद्धियों का प्रदर्शन नहीं किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में योगाभ्यास करने के विस्तृत निर्देश प्रदान किये हैं, जिसमें सर्वाधिक महत्व यम व नियम के पालन को दिया गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पृष्ठ सं. १८६ पर यम नियम का विस्तृत वर्णन करते हुए यम-नियम की कड़ाई से अनुपालना करने के निर्देश दिये हैं। आसन के संबंध में महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय में पृष्ठ सं.१६० पर स्पष्ट लिखते हैं कि जिसमें सुखपूर्वक शरीर व आत्मा स्थिर हो उसको आसन कहते हैं। प्राणायाम के संबंध में महर्षि दयानन्द सरस्वती यहीं पर लिखते हैं कि 'उन दोनों के (श्वास और प्रश्वास) आने जाने को विचार से रोके, नासिका को हाथ से कभी न पकड़े' एवं पृष्ठ सं.१८६ पर स्पष्ट लिखते हैं कि -

बालबुद्धिभिरंङ्गुल्यङ्गुष्ठाभ्यां नासिकाछिद्रमवरुध्य
यः प्राणायामः क्रियते स खलु शिष्टैस्त्याज्य एवास्ति।

अर्थात् अंगुली व अंगूठे से नासिका छिद्रों को बन्द करके जो प्राणायाम कराते हैं वे बालबुद्धि, योग-प्राणायाम की विद्या से अनभिज्ञ, खलु हैं एवं इस प्रकार का प्राणायाम शिष्ट लोगों के लिए त्याज्य है, छोड़ने योग्य है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय में पृष्ठ सं.१६१ पर प्राणायाम की विधि इस प्रकार बतायी है कि **''प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य''** यानि श्वास को बाहर फेंक कर बाहर रोक देना। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं कि 'ओ३म्' के मानसिक जाप के साथ गहरा श्वास भरें एवं जिस प्रकार अन्न जल का वमन किया जाता है उस प्रकार वेगपूर्वक श्वास को 'भू' की ध्वनि के साथ फेंक दें फिर बाहर ही रोक दें। यथासंभव रोकें फिर ओ३म् के मानसिक जाप के साथ गहरा श्वास भरें एवं 'भुवः' की ध्वनि के साथ बाहर फेंक दें फिर बाहर ही रोक दें। इस प्रकार 'ओ३म् स्वः' 'ओ३म् महः' 'ओ३म् जनः' 'ओ३म् तपः''ओ३म् सत्यम्' के जाप के साथ सात प्राणायाम करें। उक्त प्रक्रिया को दो बार और दोहराएँ इस प्रकार २१ प्राणायाम होते हैं। संध्योपासना के दौरान कम से कम उक्त २१ प्राणायाम करने के दिशा निर्देश महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदान किये गये हैं। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्देशों की अनुपालना के तहत् कम से कम आर्यसमाज के केन्द्रों पर प्राणायाम के नाम पर नाक को अँगुलियों से पकड़ कर अनुलोम-विलोम आदि प्राणायाम अपेक्षित नहीं हैं एवं निश्चित रूप से त्याज्य हैं। आर्यसमाज व योगीराज दयानन्द से जुड़े किसी भी व्यक्ति को योग के लिए बाहर भटकने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। आर्यसमाज के ग्रन्थ, वेद, उपनिषद् योग-ज्ञान से भरे पड़े हैं। जरूरत सिर्फ उनके स्वाध्याय की है। ज्ञातव्य है कि योग के अधिकृत ग्रन्थ महर्षि पतंजलि का योगदर्शन, भगवद्गीता, वेद, उपनिषद्, सत्यार्थ प्रकाश आदि में कहीं भी अनुलोम विलोम या अँगुली व अंगूठे से नाक बन्द करके करने वाले किसी प्राणायाम का जिक्र नहीं है। और क्या प्रमाण चाहिये? तथापि यदि सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को छोड़ने को उद्यत नहीं हैं, अंधानुकरण करने की आदत है, तो प्राणायाम के नाम पर सां सूं करते रहिये एवं नाखूनों को रगड़ते रहिये।

२. वेदज्ञ दयानन्द- वेद धर्म का मूल है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय में लोग तुलसीकृत रामायण व भागवत पुराण तक ही सीमित थे। वेद लगभग लुप्त हो चुके थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों का सच्चा भाष्य किया एवं वेद के संबंध में फैली भ्रान्तियों को दूर कर वेद का सच्चा स्वरूप

लोगों के सामने रखा।

३. उत्कृष्ट ब्रह्मचारी दयानन्द- भारतवर्ष में हमेशा से ही ब्रह्मचर्य के महत्व को स्वीकारा गया है। कई ब्रह्मचारी जन्मे पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसा ब्रह्मचारी फिर नहीं जन्मा। रामभक्त हनुमान ब्रह्मचारी रहे पर किसके लिए? जन कल्याण के लिए? नहीं। अपने स्वामी राम की सेवा करने के लिए। परशुराम भी ब्रह्मचारी रहे पर ब्रह्मचर्य का उपयोग किसके लिए किया? जन कल्याण के लिए? नहीं। २१ बार क्षत्रियों का संहार करने के लिए। भीष्म पितामह भी आजन्म ब्रह्मचारी रहे पर ब्रह्मचर्य का उपयोग किसके लिए किया? जन कल्याण के लिए? नहीं। अपने पिता की तुच्छ वासना की पूर्ति करने के लिए। लेकिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मृत्युञ्जय बनने के लिए, सच्चे शिव के दर्शन करने के लिए, संसार से कुरीतियों और पाखण्ड को समाप्त करने के लिए, संसार में वैदिक संस्कृति का डंका बजाने के लिए, एवं संसार का उपकार व उद्धार करने के लिए ब्रह्मचर्य धारण किया।

४. देशभक्त दयानन्द- महर्षि दयानन्द सरस्वती हर समय व हर प्रकार से भारतमाता की सेवा में लगे रहते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन देश के लिए बलिदान कर दिया। 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' का नारा देने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के सक्रिय होने व स्वराज्य के लिए प्रयत्न करने वाली कांग्रेस के जन्म से पहले ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'स्वराज्य' शब्द का उपयोग सत्यार्थ प्रकाश में किया था। स्वदेशी प्रचार के सबसे पहले प्रचारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे।

५. निर्भीक दयानन्द- आज भी जो बात कहने की हिम्मत प्रायः नहीं की जाती वह बात महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उस समय कह दी जब सामान्य गलतियों की सजा मृत्युदण्ड हुआ करती थी। उन्होंने कहा कि 'मैं परमात्मा के अतिरिक्त किसी से नहीं डरता।' जब भी महर्षि दयानन्द के शिष्यों व शुभचिंतकों द्वारा सत्य बोलने पर मृत्युदण्ड दिये जाने की आशंका जतायी जाती थी तो वे यही कहते थे कि

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।

इस तरह का हमने ऐसा रहनुमा देखा नहीं,
यूँ निडर, यूँ बेखतर, यूँ पेशवा देखा नहीं।

६. सत्यवादी दयानन्द- महर्षि दयानन्द सरस्वती को सत्य से अथाह प्रेम व लगाव था। महर्षि दयानन्द किसी भी मूल्य पर सत्य को छोड़ने के लिए कभी तैयार नहीं थे। नाना प्रकार के प्रलोभन, भय एवं अन्य तरीके महर्षि को सत्य से कभी नहीं डिगा सके। महर्षि द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के उद्देश्य के बारे में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा कि 'मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।' आर्यसमाज की स्थापना करते समय राजकृष्ण महाराज ने अधिकाधिक लोगों को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती को आर्यसमाज के नियमों में 'जीव ब्रह्म की एकता' समाविष्ट करने की सलाह दी। इस पर महर्षि ने उत्तर दिया कि 'मैं आर्यसमाज को असत्य पर स्थापित कदापि नहीं करूँगा'। सत्य के प्रति ऐसा समर्पण कभी किसी और में नहीं देखा गया।

७. तर्कशिरोमणि दयानन्द- महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी बात को इतने प्रभावशाली व इतने तार्किक ढंग से रखते थे कि उनके विरोधियों को बगलें झाँकने के लिए विवश होना पड़ता था। काशी के सभी धुरन्धर विद्वान् व पंडित एक तरफ थे व महर्षि दयानन्द सरस्वती अकेले एक तरफ थे, लेकिन शास्त्रार्थ समर में वे सब महर्षि दयानन्द सरस्वती के तर्कों के सामने टिक नहीं सके व निरुत्तर हो गये।

८. दयालु व क्षमाशील दयानन्द- जोधपुर की वेश्या नन्हीं जान के खिलाफ एक सत्य टिप्पणी करने पर उन्हें धोखे से जहर दे दिया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उस जहर देने वाले व्यक्ति को भी क्षमा कर दिया।

गुलिस्ताँ में जाकर हर इक गुल को देखा,
न तेरी सी रंगत है न तेरी-सी बू है।।
गिने जाएँ मुमकिन है सहरा के जर्रे,
समुन्दर के कतरे, फलक के किनारे।
मगर तेरे एहसाँ दयानन्द स्वामी,
है कैसे संभव गिने जाएँ सारे।।

- ६१ जे.पी.नगर,
हिरणमगरी, सेक्टर-८, उदयपुर
मो.- ०९४६२४७४१७८

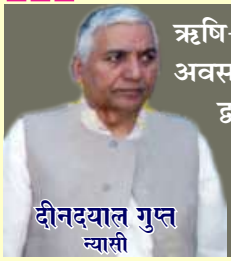

दीनदयाल गुप्त
न्यासी

ऋषि-निर्वाण दिवस के भावभीने अवसर पर, आएँ हम सब व्रत लें उनके द्वारा बताए मार्ग पर श्रद्धापूर्वक आगे बढ़ने का। ईश्वर हमें सदैव सत्य-ग्रहण और असत्य-त्याग हेतु अपेक्षित शक्ति प्रदान करे।

समाचार

वैदिक वाङ्मय में नैतिक तत्व

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम,टीकरी भोला झाल, मेरठ के तत्वावधान में दिनांक ७ अगस्त को 'वैदिक वाङ्मय में नैतिक तत्व' विषय पर शोध संगोष्ठी हुई। इस संगोष्ठी में शोध पत्रों के लिए नैतिकता को केन्द्र में रखते हुए २६ विषय विद्वानों की सेवा में प्रस्तुत किए गए। सभी शोध पत्र पावमानी में प्रकाशित किए जायेंगे। - स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

विशाल वृष्टि यज्ञ

आर्य समाज, शाहपुरा के तत्वावधान में १३ से १७ जुलाई तक ५ दिवसीय वृष्टि यज्ञ पंडित वेदप्रिय जी शास्त्री, सीताबाड़ी बारां के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पंडित शिवदत्त जी पाण्डे, सुल्तानपुर, श्री रघुनाथदेव जी वैदिक, एटा व डॉ.जितेन्द्र कुमार जी के प्रेरक उद्बोधन भी होते रहे। यज्ञ की पूर्णाहुति में राजपरिवार से भाणेज बना सा. महेन्द्र कुमार एवं बाईसा मृदुला कुमारी जी भी पधारीं।

- सत्यनारायण तोलम्बिया

संस्कृत सम्भाषण शिविर

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर में १० दिवसीय निःशुल्क संस्कृत सम्भाषण शिविर का आयोजन १४ से २३ जुलाई तक किया गया। इस सफल कार्यक्रम के समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर की संस्कृत विभागाध्यक्षा डॉ. नन्दिता सिंघवी ने कहा कि भारत संस्कृत और वेदों के कारण ही विश्व गुरु बना। कभी संस्कृत लोकभाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी। आज पुनः इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

- महेश सोनी, मंत्री

वृष्टि यज्ञ का समापन

आर्य समाज डोहरिया के तत्वावधान में १६ से २१ जुलाई २०१४ तक वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। इस दौरान खूब वर्षा हुई और सभी ग्रामवासी प्रसन्न हुए। श्री रघुनाथ देव, भजनोपदेशक, एटा ने अपने भजनों के माध्यम से उद्बोधन प्रदान किया। - कन्हैया लाल साहू

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

श्री सत्यपाल जी शास्त्री दिल्ली के ब्रह्मत्व में आर्य समाज केसरपुरा रोड, शिवगंज में दिनांक १ से ७ सितम्बर तक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्री सत्यपालजी शास्त्री के अतिरिक्त ब्रह्मचारी महानन्द व ब्रह्मचारी मनीष ने सहभागिता की। - बसन्त कुमार गहलोत, मंत्री

सामवेद परायण यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज, श्रीगंगानगर के तत्वावधान में आचार्या अन्नपूर्णा जी के ब्रह्मत्व में ७ से १४ सितम्बर तक सामवेद परायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वेद प्रचार का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, आर्यभूषण डॉ. भवानी लाल भारतीय, डॉ. वेदपाल, श्रीमती पुष्पा शास्त्री आदि विद्वान् एवं विदुषियों के सारगर्भित उद्बोधन हुए। इस अवसर पर द्रोण स्थली आर्ष कन्या गुरुकुल, देहरादून की ब्रह्मचारिणियों ने मंत्र पाठ किया। - रविप्रकाश, मंत्री

आवाज लगाकर सत्यार्थ प्रकाश बेचे

१३ जुलाई को रावतभाटा के हाट बाजार स्थित बस स्टेण्ड पर आवाज लगा लगाकर महर्षि की अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश का विक्रय किया गया। इस पवित्र कार्य में आर्य जिला सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुन देव जी चड्ढ़ा, श्री जे.एस. दूबे, रामप्रसाद जी याज्ञिक आदि ने सहभागिता की और चालीस रु. मूल्य का सत्यार्थ प्रकाश दस रु. में बेचा। एक सौ से अधिक सत्यार्थ प्रकाश इस अवसर पर बेचे गए। - अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव

श्रावणी पर्व मनाया गया

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर में श्रावणी उपाकर्म पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने श्रावणी पर्व के महत्व को उकेरित करते हुए यज्ञोपवीत के तीन धागों का संदेश भी श्रोताजनों के समक्ष प्रस्तुत किया और प्रेरणा दी कि प्रत्येक आर्य को कम से कम एक वेदमंत्र अर्थ सहित प्रतिदिन पढ़ना चाहिए और तदनुरूप आचरण भी करना चाहिए। - भूपेन्द्रशर्मा, उपमंत्री

वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन

छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम,कोसरंगी में बृहद् सम्मेलन का आयोजन दिनांक ५ व ६ दिसम्बर २०१४ को आयोजित किया जा रहा है जिसमें भारतवर्ष के कोने-कोने से १०० से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है। इस अवसर पर उच्च कोटि के साधु संन्यासी, विद्वान्, महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं मंत्रीगणों के पधारने की संभावना है। - आचार्य जी

पुरोहित सभा का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य पुरोहित सभा, मुम्बई का निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसमें श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्री ईश्वरमित्र शास्त्री को संरक्षक एवं डॉ. सोमदेव जी शास्त्री को परामर्शदाता घोषित किया गया। प्रधान पद पर पंडित नामदेव आर्य, मंत्री पद पर श्री नरेन्द्र शास्त्री एवं कोषाध्यक्ष पद पर श्री विनोद कुमार शास्त्री का चयन सर्वसम्मति से हुआ। न्यास परिवार एवं सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

अभूतपूर्व एवं दुर्लभ शारद यज्ञ

दयानन्द मठ, चम्बा के ३४ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर २५ एवं २६ सितम्बर २०१४ को शारद यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ २५ सितम्बर २०१४ को प्रातः ६.३० बजे से आरम्भ होकर दिन रात अनवरत् चलते हुए २६ सितम्बर को प्रातः ६.०० बजे पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। आचार्य महावीर सिंह यज्ञ के मुख्य यजमान थे।

- पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती

श्री छोटूसिंह आर्य जयन्ती

प्रसिद्ध आर्य नेता एवं स्वतंत्रता सैनानी (स्मृति शेष) श्री छोटूसिंह आर्य के ६४ वें जन्म दिवस के अवसर पर सात दिवसीय कार्यक्रम दिनांक ६ से ११ अगस्त और ३१ अगस्त २०१४ को रखा गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों के साथ साथ ६२ वां निःशुल्क चिकित्सा व जाँच शिविर भी आयोजित किया गया। - श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति, अलवर

हलचल

सघन साधना शिविर का आयोजन

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ में एक वर्षीय सघन साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह १ अक्टूबर २०१४ से आरम्भ होकर अगले ३० सितम्बर २०१५ को सम्पन्न होगा। इसमें उच्च स्तर के साधक, साधिका भाग लेंगे और विशेष रूप से वेद दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ध्यान, उपासना का प्रशिक्षण, विवेक, वैराग्य , समाधि की प्राप्ति निदिध्यासन आदि के रूप में उसके वैज्ञानिक विधि एवं उपायों का परिज्ञान कराया जायेगा। - ब्रह्म वेदानन्द सरस्वती, अध्यक्ष

सृष्टि गोयल को कल्पना चावला पुरस्कार

द्वादश 'कल्याणमल आर्य स्मृति कल्पना चावला पुरस्कार' आर्य समाज भवन,हिण्डौन में १८ अगस्त को कुमारी सृष्टि गोयल (कोटा) को दिया गया। पुरस्कार के अंतर्गत ५१०० रु. की नगद राशि के साथ प्रशस्ति पत्र, पतंजलि योग पीठ, हरिद्वार के महासचिव श्री अजय आर्य ने प्रदान किए। श्री यशपाल यश, श्री गोकुल चन्द गोयल, डॉ. प्रमोद पाल, संजय गुप्त एवं प्रभाकर देव आर्य ने इस अवसर पर उद्‌बोधन प्रदान किया। - ईश्वर दयाल माथुर

सहारनपुर का ११ वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, जड़ौदा पाण्डा, सहारनपुर (उ.प्र.) का ११ वाँ वार्षिकोत्सव १७ से १६ अक्टूबर २०१४ को मनाया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत् के वेद विद्वान् डॉ. शिवदत्त पाण्डे, सुलतानपुर एवं वेदालंकार डॉ. जितेन्द्र कुमार, राजस्थान के अलावा ख्यातिप्राप्त भजनोपदेशक पं. संदीप वैदिक, मुजफ्फरनगर पधार रहें हैं। - सूरजमल त्यागी, कोटा

जोधपुर-प्रवास स्मृति का १३१ वाँ महोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जोधपुर आगमन-प्रवास स्मृति का १३१ वाँ महोत्सव दिनांक २६से ३० सितम्बर २०१४ को मनाया जा रहा है। कार्यक्रम में पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के अतिरिक्त अनेक विद्वान् व भजनोपदेशक भाग ले रहे हैं। - विजय सिंह भाटी, प्रधान, स्मृति भवन न्यास, जोधपुर

प्रतिस्वर

आदरणीय श्री अशोक जी आर्य आपकी सत्यार्थ सौरभ पत्रिका का अगस्त २०१४ का अंक मिला। आपका सम्पादकीय 'घातक है साहित्यिक मिलावट'मिला,पढ़ा। आपकी पीड़ा ही मेरी पीड़ा है। पिछले हजारों वर्षों से देश में लेखक होने का रोग भारतीय विद्वानों को ऐसा लगा कि हर कोई मनमाने ग्रन्थ लिखता रहा, ऋषियों के नाम पर भी लिखता रहा, उनके ग्रन्थों में प्रक्षेप भी करता रहा। तब देश में वैदिक शासन व्यवस्था न होने से सबकी मनमानी हो रही थी। राजर्षि भोजदेव तो सब नहीं थे।

आज उस दुर्दशा पर आँसू बहाने वाले भी इस अभागे देश में विरले हैं, ऐसे में श्री दीनानाथ बत्रा बधाई के पात्र हैं, परन्तु यहाँ बत्रा के विरोधी बहुत हैं। पौराणिक वर्ग मदहोश है, तो आर्य समाज की दुर्दशा भी कम नहीं है। हर विद्वान् यहाँ भी लेखक ऋषि ग्रन्थों का संशोधक बनने का प्रयास कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश की दुर्गति हो रही है। आर्य विद्वानों के वेदभाष्य, शतपथ, ऐतरेय ब्राह्मण एवं उपनिषदों के भाष्य में ऐसी अनेक बातें हैं, जिनसे वैदिक धर्म व संस्कृति के नाशक देशी व विदेशी कभी भी आर्य समाज और प्राचीन भारतीय गौरव की रही सही लाज भी मिटा सकते हैं। सभायें मेले लगाने में ही अपने को धन्य मान रही हैं, विद्वान् धनार्जन व सैरसपाटे के लिए विदेशों में भ्रमण को सबसे बड़ा धर्म मान रहे हैं, कोई किसी की मानता ही नहीं है। मेरा सामर्थ्य नहीं कि इन सारे रोगों की चिकित्सा कर सकूँ। कभी एकान्त में सोचता हूँ तो बड़ी घबराहट होती है, कभी इस सबसे तीव्र वैराग्य भी होने लगता है। आप ऐसे ही जगाते रहें। मैं तो स्वयं अपने अनुसंधान में व्यस्त हूँ। सभी लेख पढ़ भी नहीं पाता, पढ़ूँ भी तो उसकी प्रतिक्रिया भी नहीं लिख पाता हूँ। चार पाँच दिन से ज्वर से पीड़ित होने से विश्राम में हूँ, इस कारण लेख भी पढ़े और यह पत्र भी लिख दिया। - आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

।।ओ३म्।।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

के तत्त्वावधान में

१७ वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

एवं

अखिल भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का वार्षिक सम्मेलन

वयोवृद्ध भजनोपदेशक सम्मान समारोह

दिनांक ११-१२ अक्टूबर २०१४

सभी भाई-बहिनों से विनम्र निवेदन है कि महोत्सव में अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें।

कार्यक्रम
दिनांक ११ अक्टूबर, २०१४, शनिवार
यज्ञ
प्रात: ७.३० से ९.३०
ध्वजारोहण
प्रात: ९.४५ से १०.००
भजन-प्रवचन
प्रात: १०.०० से १२.००
अपराह्न २.०० से ४.००
रात्रि ७.०० से १०.००

कार्यक्रम
दिनांक १२ अक्टूबर, २०१४, रविवार
यज्ञ
प्रात: ७.३० से ९.३०
भजन-प्रवचन
प्रात: १०.०० से १२.३०
अपराह्न २.०० से ४.३०
४.३० बजे समापन

निवेदक

महाशय धर्मपाल, अध्यक्ष
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, न्यासी
अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष
डॉ. अमृतलाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री एवं संयोजक
भवानीदास आर्य, मंत्री
विजय शर्मा, उपाध्यक्ष
नारायण मित्तल, कोषाध्यक्ष
श्रीमती शारदा गुप्ता, महिला संयोजिका
एवं समस्त न्यास परिवार

हमारी पहचान-भारतवासी या ... ?

डा. रवीन्द्र अग्निहोत्री

देश के स्वतंत्रता आन्दोलन के समय के एक नेता थे- डा. सैयद महमूद। सुशिक्षित व्यक्ति थे। पत्रकार भी थे। स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत के "Indian Diplomat in USA " रहे। इलाहाबाद में नेहरू जी के आनंद भवन में उनका बहुत आना- जाना था और नेहरू परिवार से उनकी बहुत निकटता थी। उन्होंने कई विदेश यात्राएँ भी कीं। ऐसी ही एक यात्रा के दौरान एक घटना ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। उस घटना का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है-

'मेरे साथ जर्मनी में एक ऐसी घटना घटी जिसने मेरी ज़िंदगी का रुख ही बदल दिया। जब मैंने वह घटना गाँधी जी को सुनाई तो उन्होंने कहा कि इसे बार-बार और हर जगह सुनाइए और इसे सुनाते हुए कभी न थकिए।

हुआ यह कि जब मैं जर्मनी पहुँचा तो प्रो. स्मिथ से मेरी मुलाक़ात हुई। वे बहुत बड़े विद्वान् थे। उन्होंने हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति, वेद आदि के बारे में मुझसे कई सवाल किए। जब मैं उनमें से किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे पाया तो डा. स्मिथ बड़े हैरान हुए। मुझे ख्याल आया कि मैं बनारस (वर्तमान वाराणसी) से आया हूँ। इसीलिए शायद प्रोफ़ेसर मुझे हिन्दू समझ रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि मैं हिन्दू नहीं हूँ।

उन्होंने कहा,' मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप मुसलमान हैं। आपका नाम महमूद है। आप सैयद खानदान के हैं। मगर क्या आप हाल ही में अरब से जाकर हिन्दुस्तान में बसे हैं ? इस पर मैंने जवाब दिया,'नहीं, पुश्तों से हमारे आबा व अजदाद हिन्दुस्तान में रहते आए हैं और मैं भी हिन्दुस्तान में ही पैदा हुआ हूँ।'

'क्या आपने गीता पढ़ी है? 'उन्होंने सवाल किया। मैंने कहा, नहीं। उनकी हैरानी बढ़ती जा रही थी, और मैं उनकी हैरानी और सवालों से परेशान भी था, और शर्मिन्दा भी। उन्होंने फिर पूछा,'मुमकिन है आप अपवाद हों, या क्या सब पढ़े- लिखे हिन्दुस्तानियों का यही हाल है ?

मैंने उन्हें बताया कि ज्यादातर हिन्दुस्तानियों का, चाहे वे मुसलमान हों या हिन्दू, यही हाल है। हम एक-दूसरे के धर्मों और उनके लिटरेचर के बारे में बहुत कम जानते हैं। इस पर वे सोच में पड़ गए।

इस घटना ने मेरी ज़िन्दगी पर भी बहुत गहरा असर डाला। मैंने सोचा, वाकई, हम हिन्दुस्तानियों की कितनी बड़ी बदकिस्मती है कि हम सदियों से एक दूसरे के साथ रहते आए हैं, पर एक-दूसरे के धर्म, सभ्यता और संस्कृति तथा रस्मो-रिवाज़ से कितने अनभिज्ञ हैं। और मैंने जर्मनी में रहते हुए ही हिन्दू धर्म, ख़ास तौर पर गीता का अध्ययन शुरू कर दिया। (विस्तार से पढ़ें, नीति; भारत विकास परिषद्, नई दिल्ली; अगस्त १९९४, पृष्ठ ३४)

उक्त घटना लगभग आठ दशक पुरानी है, पर आज भी आए दिन ऐसी घटनाएँ सुनने को मिलती हैं जिनसे यही सिद्ध होता है कि हमारे देश की स्थिति में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं आया है, बल्कि अब नई पीढ़ी के सन्दर्भ में तो एक आयाम और जुड़ गया है और वह यह कि 'सुशिक्षित' होने के बावजूद वे अपने ही धर्म, उसके ग्रन्थ, उसकी आधारभूत मान्यताओं आदि से अनभिज्ञ हैं। इसीलिए अनेक लोग उनके इस अज्ञान का लाभ उठाते हैं । देश में बढ़ रहे तरह-तरह के अंधविश्वास भी इसी अज्ञान के परिणाम हैं।

लगभग चार वर्ष पहले का एक समाचार याद आ रहा है। मुंबई के पं. गुलाम दस्तगीर बिराजदार की तरह रामपुर (उत्तर प्रदेश) के श्री सैयद अब्दुल्ला तारिक सुशिक्षित व्यक्ति हैं। उन्होंने कुरान का तो अध्ययन किया ही है, साथ ही वेदों का भी अध्ययन किया है। अतः उन्हें इन महान् ग्रंथों की समानताओं एवं विशेषताओं पर व्याख्यान देने के लिए जब- तब आमंत्रित किया जाता है। ऐसे ही एक व्याख्यान के लिए उन्हें हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली में बुलाया गया। लगभग दो सौ श्रोता हाल में बैठे हुए थे जिनमें लगभग साठ प्रतिशत 'हिन्दू' थे।

श्री तारिक ने श्रोताओं से प्रश्न किया कि जिस प्रकार कुरान मुसलमानों का या बाइबिल ईसाइयों का आधारभूत ग्रन्थ है, ऐसा हिन्दुओं का कौन-सा ग्रन्थ है? पर श्रोताओं में से कोई भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका। ज़रा ध्यान दीजिए कि दो सौ श्रोताओं में साठ प्रतिशत हिन्दू थे, और ये कोई अनपढ़ नहीं, विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले लोग थे, पर इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके। तब श्री तारिक ने स्वयं बताया कि वह ग्रन्थ है 'वेद' जो संख्या में चार हैं। इसके बाद कुछ पूछने की गुंजाइश तो नहीं थी, फिर भी उन्होंने पूछा कि क्या किसी को कोई वेद मंत्र याद है? क्या आपने कोई वेद देखा है? उन्होंने मनुस्मृति और महाभारत के बारे में भी पूछा, पर उत्तर नहीं मिला। (विस्तार से पढ़ें, द टाइम्स आफ़ इंडिया, नई दिल्ली, २ नवम्बर, २००८, पृष्ठ ७) ।

कुछ वर्ष पहले सोनी टी वी पर एक कार्यक्रम देखा 'कौन बनेगा करोड़पति।' प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन इसे संचालित कर रहे थे। जो पाठक इसकी संकल्पना से परिचित न हों उन्हें बता दूँ कि यह एक तरह की प्रतियोगिता का कार्यक्रम है और विशेष तैयारी करके ही प्रतियोगी इसमें

शामिल हो पाते हैं। इसके चयनित प्रतिभागियों को दस-दस के समूह में बाँट लिया जाता है। फिर एक समूह के समक्ष एक सरल-सा प्रश्न दिया जाता है। जिसका उत्तर उन्हें निर्धारित समय में देना होता है। उस समूह का जो प्रतियोगी सबसे कम समय में शुद्ध उत्तर देता है, उसे हाट सीट के लिए आमंत्रित किया जाता है। ऐसे ही एक सरल से प्रश्न में चार प्रसिद्ध 'धर्म प्रवर्तकों' के नाम देकर उन्हें ऐतिहासिक काल क्रम से व्यवस्थित करने के लिए कहा गया अर्थात् जो पहले हुआ उसका नाम पहले रखना था। नाम थे- गौतम बुद्ध, मोहम्मद साहब, ईसा मसीह और गुरु नानक। जब परिणाम सामने आया तो पता चला कि दस प्रतियोगियों में से केवल दो प्रतियोगी ही इसका शुद्ध उत्तर दे पाए ।

ये सभी घटनाएँ हमारे उसी अज्ञान के प्रमाण प्रस्तुत कर रही हैं। आवश्यक है कि हम अपने इस अज्ञान को दूर करें। अपने देश को यदि हम उसकी 'समग्रता' में जानने का प्रयास करेंगे तो हमें अपने धर्म की भी बेहतर जानकारी होगी और इस देश में रहने वाले अन्य धर्मावलम्बियों के धर्म, रीति-रिवाज़ आदि की भी। इस दृष्टि से महर्षि दयानंद सरस्वती का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' भारत में प्रचलित धर्मों का विश्वकोश माना जा सकता है जिसमें हमें अपने वैदिक धर्म की ही नहीं, भारत में प्रचलित विभिन्न धर्मों (पंथों) की भी अपेक्षित जानकारी मिल जाती है। ध्यान रखिए, विश्व में किसी भी व्यक्ति की पहचान इसी रूप में होती है कि वह किस देश का रहने वाला है। हमारी भी पहचान भारतवासी के रूप में होती है, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई के रूप में नहीं। मैं काफी समय आस्ट्रेलिया में रहा। जब भी कोई अपरिचित व्यक्ति मुझसे बात करता था तो उसका प्रश्न होता था, Are you from India मेरे yes कहने के बाद वह यह नहीं पूछता था Are you Hindu, Muslim, Christian। वह अपना परिचय भी इसी रूप में देते हुए बताता था I am from Britain, Spain, Greece, China, Vietnam etc- भारत में रहने वाला कोई ईसाई या मुसलमान जब ईसा मसीह या मोहम्मद साहब को ही अपना आदि- अंत मान लेता है तो वह वैसी ही भूल करता है जैसी बहुत से हिन्दू आठवीं-नवीं शताब्दी के शंकराचार्य और उनके द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद को ही अपना सर्वस्व मान लेते हैं या कुछ सिख यह मान लेते हैं कि गुरुग्रंथ साहब और दस गुरुओं के आगे-पीछे कुछ नहीं। ऐसी सीमित दृष्टि से देखने पर हमारा ध्यान सैकड़ों नहीं, हज़ारों वर्ष पुरानी उस सम्पदा की ओर जाता ही नहीं जो न केवल इस देश की, बल्कि पूरे विश्व की अनमोल थाती है। वह व्यापक दृष्टि हमें तभी मिल सकती है जब हम यह सोचें कि हिन्दू , ईसाई, मुसलमान तो हम बाद में हैं, सबसे पहले हम भारतवासी हैं। जब हमारी सोच ऐसी होगी तब हमें अपने देश के बारे में, उसकी उपलब्धियों और उसकी सम्पदा के बारे में समग्र रूप में जानने की आवश्यकता शिद्दत से स्वयं महसूस होगी ।

सदस्य , हिंदी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार
१३८ एम् आई जी, पल्लवपुरम फेज़- २ मेरठ २५०११०

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली**- ७ के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती स्नेहलता गुप्ता (उदयपुर), श्री आदित्य सोनी (बीकानेर), पल्लव सोनी (बीकानेर), श्री मधुर कुमार गोस्वामी (बीकानेर), श्री हरिप्रकाश (बीकानेर), श्रीमती रेखा (बीकानेर), वीणा सोनी (बीकानेर), लक्ष्मी स्वर्णकार (बीकानेर), सीमा वर्मा (बीकानेर), संजय शर्मा (बीकानेर)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

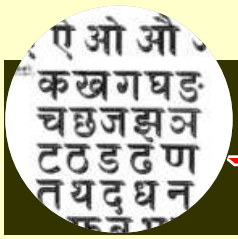

महर्षि दयानन्द का हिन्दी को योगदान

गतांक से आगे .....

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तथा बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में शायद ही ऐसा कोई मनीषी अथवा सहित्यकार हुआ हो जो कि आर्य-समाज से प्रभावित न हुआ हो। बीसवीं शताब्दी के पूर्व में आर्यसमाजी होना प्रगतिशील, आधुनिकता एवं बुद्धिवादी होने का पर्याय रहा है क्योंकि आर्य-समाज की रीढ़ बुद्धिवाद रही है। आर्य-समाज ने हिन्दी साहित्य को सबसे बड़ा कवि दिया- स्वर्गीय नाथूराम शर्मा 'शंकर'। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा दयानन्द एवं आर्य-समाज को अमरत्व प्रदान किया था। उन्होंने ऋषि का काव्य तर्पण इन शब्दों में किया:-

आनन्द सुधा-सार दया कर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।।
डाला सुधार-वारि बढ़ी बेल मेल की।
देखो समाज फूल फबीले खिला गया।।
काटे कराल जाल अविद्या अधर्म के।
विद्या-वधू को धर्म धनी से मिला गया।।
ऊँचे चढ़े न क्रूर कुचाली गिरा दिए।
यज्ञाधिकार वेद पढ़ों को दिला गया।।
खोली कहाँ न पोल ढके ढोंग ढोल की।
संसार के कुपंथ मतों को हिला गया।।
'शंकर' दिया बुझाय दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल वदन में बिला गया।।

दयानन्द अपने समय से बहुत आगे थे। वे समाज सुधारक नहीं अपितु क्रांतिकारी थे। आर्य समाज ने गांधी युग के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

जब राजनीति में गाँधी-युग प्रवहमान था तब हिन्दी साहित्य में छायावाद-युग। उन्नीसवी शताब्दी में हमारे देश में जो सांस्कृतिक पुनर्जागरण आया- उसमें आर्य समाज की वरेण्य, अग्रगण्य, ऐतिहासिक तथा प्रभावोत्पादक भूमिका रही और

इसी सांस्कृतिक पुनरुत्थान को छायावाद-युग ने श्रेष्ठ तथा कलात्मक वाणी प्रदान की। जयशंकर 'प्रसाद' ने इसी परिवेश में लिखा कि 'महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्थापित आर्य समाज इन सभी संस्थाओं (ब्रह्म-समाज, प्रार्थना-समाज तथा रामकृष्ण मिशन) में अग्रणी रहा क्योंकि इसके माध्यम से सैद्धान्तिक उपदेशों के स्थान पर रचनात्मक कार्यों को व्यवहार में लाया गया। भारतीय संस्कृति का प्रचार, बालविवाह-निषेध, विधवा-विवाह का समर्थन और गुरुकुलों की स्थापना- आर्य समाज के प्रमुख कार्य हैं। स्त्री-शिक्षा के लिए आर्य कन्या पाठशालाओं की स्थापना का सर्वोत्तम प्रबन्ध है। इसके साथ ही स्वामी दयानन्द ने युग निर्माता की भाँति देश के सुप्त मस्तिष्क को प्रबुद्ध करने का प्रयास किया।' उनका 'सत्यार्थ-प्रकाश' इस दिशा में अपना निजी महत्व रखता है। सामाजिक जीवन को उत्प्रेरित करने और अतीत की संस्कृति के पुनरुद्धार के निमित्त उनके आर्य समाज का कार्य प्रशंसनीय रहा है। उसमें प्रतिक्रिया की भावना के स्थान पर नवनिर्माण की वास्तविक लालसा प्रमुख रही है।'

बंगाल में आये सांस्कृतिक पुनजार्गरण को अगस्त्य ऋषि की भाँति पद्य में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और गद्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने पीया। यद्यपि 'निराला' जी बंगभूमि की सांस्कृतिक साहित्यिक चेतना से विशेषतया अभिभूत थे फिर भी वे आर्य समाज की उपेक्षा नहीं करते। दयानन्द ने भी बंगाल की यात्रा की थी। 'निराला' ने 'महर्षि दयानन्द और युगान्तर' नामक निबन्ध लिखकर आर्य समाज का जैसा सम्यक् मूल्यांकन किया वह न भूतो न भविष्यति। उन्होंने लिखा- 'उन्नीसवीं सदी का परार्द्ध, भारत के इतिहास का अपर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर, इस समय, इस पुण्यभूमि में अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्हीं में एक महाप्रतिज्ञा मण्डित महापुरुष हैं।'

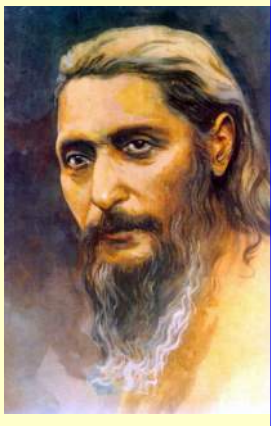

सन् १९८२ में लिखित इस लेख में 'निराला' ने दयानन्द तथा आर्य समाज को एक नूतन परिच्छेद के रूप में देखा परखा। चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानन्द जी महाराज में प्राप्त होते हैं, उनका लेशमात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा-सम्भूत नहीं, पुनः ऐसे आर्य में

ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वंय इसके उदाहरण हैं। मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नतमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है, महर्षि दयानन्द सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खण्डन हैं। महर्षि दयानन्द जी से बढ़कर भी मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। यही वैदिक ज्ञान मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है, यहीं आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है। यहाँ से भारत के धार्मिक इतिहास का एक नया अध्याय शुरू होता है यद्यपि वह बहुत ही प्राचीन है। हमें अपने सुधार के लिए क्या-क्या करना चाहिए, हमारे सामाजिक उन्नयन में कहाँ-कहाँ और क्या-क्या रूकावटें हैं, हमें मुक्ति के लिए कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। आर्य-समाज की प्रतिष्ठा भारतीयों में एक नये जीवन की प्रतिष्ठा है, उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। देश में महिलाओं, पतितों तथा जाति-पाँति के भेद-भाव मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज से बढ़कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण भारत में दीख पड़ता है, उसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्य समाज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहाँ इसी समाज में श्रीगणेश हुआ। भिन्न जाति वाले बन्धुओं को उठाने तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का उद्यम आर्य समाज ही करता रहा। शहर-शहर, जिले-जिले, कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण, आर्य समाज की स्थापना हो गई। राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी स्वामीजी एक प्रवर्तक हैं और आर्य-समाज के प्रचार की तो यह भाषा ही रही है। अनेक गीत खिचड़ी शैली के तैयार किये और गाये गये। शिक्षण के लिए 'गुरुकुल' जैसी संस्थाएँ निर्मित हो गईं। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा।

छायावाद की प्रमुख रचनाकर्त्री महादेवी वर्मा ने 'नवीन क्रान्ति के बीजोरोपण' के रूप में आर्य-समाज का परीक्षण किया-

'स्व. दयानन्द युग द्रष्टा युग-निर्माता थे। मेरे संस्कारों पर ऋषि दयानन्द का पर्याप्त प्रभाव है। स्त्रियों को वेदाधिकार दिलाकर महिलाओं में नवीन क्रान्ति का बीजारोपण किया। नारी की स्थिति में सुधार की अनवरत चेष्टा करते रहे। नारियों की वेदना देखकर वह कहा करते थे, भाई! इससे अधिक हृदय-विदारक दुःख क्या हो सकता है? विधवाओं की दुःखभरी आहों से इस देश का सर्वनाश हो रहा है। दयानन्द ने वेदों की वैज्ञानिक व्याख्याएँ प्रस्तुत कर, वैदिक अध्ययन प्रणाली में एक नूतन युग का सूत्रपात किया है। इन्हीं सभी कार्यों के लिए हम सब उनके ऋणी हैं।'

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा ने आर्य समाज को विशेष महत्ता तथा गरिमा प्रदान की। द्विवेदी युग के ही रामनरेश त्रिपाठी ने ऋषि को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी -

लोक-हित-चिंतन में गृह-सुख-त्यागी,
वेद-ब्रह्म का अनन्य अनुरागी ऊर्ध्वरेता था।
ज्ञानी, अद्वितीय अभिमानी आर्य सभ्यता का,
जीवन का दानी धर्म-ग्रन्थ का प्रणेता था।।
हरि के समान कोटि-कोटि शिव मण्डल में,
विकट विरोधियों के वृन्द का विजेता था।
भारत के भाग्य का भविष्य रूप दयानन्द,
शंकर के बाद हिन्दुओं में एक नेता था।।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के बाल्यावस्था के संस्कार आर्य समाजी थे। उन्होंने ऋषि को अपनी आस्था अर्पित करते हुए लिखा था -

दयानन्द हो ? हिन्दूपन की, या तुम पहली परिपाटी हो ?
हे महर्षि ! क्या आर्य जगत् के पथ की मूर्तिमती घाटी हो ?
सुगम अगम का सम्मिश्रण हो, या सदुदार वेद पाठी हो ?
अथवा तुम पाखण्ड-खण्डिनी विजय-पताका की लाठी हो ?
तुम ही सब कुछ हो भारत की, जाग्रति की पहली करवट हो।
दीना जननी की पुकार के तुम प्रत्युत्तर रूप प्रकट हो।।
पापों के बकवाद जाल की, आग बुझाने को जलघट हो।
लौकिक लंका के दाहन को तुम प्रकटे हनुमान सुभट हो।।
दश दशकाब्दियाँ बीती हैं, बीत जायेगी सहस्राब्दियाँ।
हम बिगड़े फिर, बन जायेंगे यह 'है' हो जायेगी 'थी' हाँ।।
किन्तु दूर भावी के तल से उद्वेगी ध्वनि यहीं 'संभलना'।
भूल न जाना विप्लवकारी शिशु ऋषि दयानन्द का पलना।।

डॉ. रामधारीसिंह 'दिनकर' ने 'संस्कृति के चार अध्याय' में दयानन्द पर एक स्वतन्त्र अध्याय प्रदान कर बड़े ओजस्वी शब्दों तथा प्रभावी शैली में उनका सफल-सार्थक प्रस्तुतीकरण किया। 'राजनीति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द में निखरा। जो बात राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और रानाडे आदि के ध्यान में नहीं आयी थी, उसे लेकर ऋषि दयानन्द और उनके शिष्य आगे बढ़े और घोषणा की कि कोई भी हिन्दू (आर्य) धर्म में प्रवेश पा सकते हैं, हमारा गौरव

सबसे प्राचीन और सबसे महान् है- यह जाग्रत हिन्दुत्व का महासमरनाद था। रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं हुआ। दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक थे। किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आगे बढ़े। वे हिन्दू धर्म के रक्षक होने के साथ ही विश्व-मानवता के नेता भी थे।

आर्य-समाज के साहित्यकारों में डॉ. मुन्शीराम शर्मा 'सोम' ने हिन्दी वाङ्मय को तद्विषयक रचनाओं से आपूर्ण किया। स्वर्गीय कविवर भवानी प्रसाद मिश्र ने अपनी सहज शैली में लिखा था:-

मत पालो, नौकाओं के झगड़े, चीरकर देखो यह पारावार,
अपने ही शरीर से, पुकारेंगे तीर से लोग, लौट आओ,
मगर तुम, आगे-आगे जाओ, तुम्हें आगे बढ़ायेंगी,
साधारणतया डुबाने वाली लहरें, ठहरें जिन्हें,
ठहरे रहना है, प्राणों के मोह से,
तुम मत पालो नौकाओं के झगड़े,
चीरकर देखो यह पारावार, अपने ही शरीर से,
जैसा अभी-अभी किया था, राजा राममोहन राय ने
दयानन्द ने, गाँधी ने, तिलक ने, रवीन्द्र ने।।

क्रमशः .....

- डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे
डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (म.प्र.)

सत्यार्थप्रकाश पहेली-९

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

	१ ना				२ अ			३ ज्ञा		
		४ ह्मा		५	श्व		र		६	क्ति
७	त्य		८	श्वे	८	र		९	९	ष

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जिसके पूर्व कुछ न हो और परे हो, उसको आदि कहते हैं। जिसका आदि कारण कोई भी नहीं है, इसलिये परमेश्वर का नाम है।
२. जो सब प्रकृति के अवयव आकाशादि भूत परमाणुओं को यथायोग्य मिलाता, शरीर के साथ जीवों का सम्बन्ध करके जन्म देता और स्वयं कभी जन्म नहीं लेता, इससे उस ईश्वर का नाम है।
३. जो सबका जानने वाला है, इससे परमेश्वर का नाम है।
४. जो सम्पूर्ण जगत् को रचके बढ़ाता है, इसलिये परमेश्वर का नाम है।
५. जो जगत् का धारण और पोषण करता है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम है।
६. जो सब जगत् के बनाने में समर्थ है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम है।
७. जो पदार्थ हों उनको सत् कहते हैं। उनमें साधु होने से परमेश्वर का नाम है।
८. जो संसार का अधिष्ठाता है, इससे उस परमेश्वर का नाम है।
९. जो सब जगत् में पूर्ण हो रहा है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ नवम्बर २०१४

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमल सूद, पाण्डाघाट, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर

Medical Science in the Vedas (Part-2)

- Ramesh Gupta,
M.D., F.A.C.P, F.A.C.G.
Gastroenterologist, NJ. (USA)

Medical Science References in Atharva Veda(A.V.) 42 parts of body have been described and 36 qualities of mind have been described. Ref: AV 10.2.9/10/17, 11.8.19-27

Sushrut has described that heart has the shape of upside down lotus. He also mentioned that it contracts and relaxes and slows down when we sleep.

Atharva Veda described that Vata, Pitta and Kapha exists as a form of vital energy in the body. Pitta has been described as fire A.V. 18.3.5.

5 types of Vata(vayu) prana, apan, vyan, saman and udan have been mentioned in A.V.9.8.20.,6.109.3,6.44.3

Kapha has been called Somavat(calm). A.V. 1.12.3.,6.14.1.,8.7.10.

Arteries, Veins, Nerves have been described in A.V. 1.17.2/3,7.35.2 in reference to trauma, where efforts/prayers are made for stopping of bleeding and closure of wound with closure/rejoining of the nerves and vessels. There are many references in Ramayana and Mahabharata about taking care of wounds of those injured in the war.

Sushrut has described 700 veins, 24 arteries, 500 muscles, 900 ligaments, 300 bones and 210 joints.

Intestine has been described as 22 ft. and the colon as 5 ft.

Sushrut has described 7 layers/coverings of Skin. The first layer is visible and gives us the color of skin and other deeper layers have been described from which various diseases such as skin abscesses, anal fistula/abscesses etc. originate. According to Charak, there are 6 layers. The first one has water, next blood, next the origin of leprosy and vitiligo, next ring worm, next furuncles and abscesses etc. Modern medicine describes 2 layers, the Outer Epidermis with 5 layers and the deeper Dermis with 2 layers.

107 vital parts have been described in A.V. 7.118.1. The concept of vital parts is different here than in modern medicine. These should be actually called important parts. It has been described that person dies if injury to these parts occurs. Here God describes in first person that I protect your vital parts/organs of body and also a prayer has been done for protection of vital pars and long life. Here vital parts include those needed for basic quality of life, such as hands, feet, fingers, toes, organs of defecation and urination, back, hips, head, neck and breasts. Internal organs such as heart, lungs and brain have been included as well.

Seminal Fluid: Acording to Sushrut, seminal fluid pervades in entire body and then it collects in testicles to be ejaculated.

The word Nidan mainly means the main cause of a particular illness. Means to arrive at a diagnosis and treatment are also called Nidan.

Vata Pitta and kapha have been considered as the main reason for any disease. Inappropriate and irregularity in food intake or ingestion/inhalation/injection of any undesired substance has been labeled as the reason for disturbance in the balance of the 3 doshas. Disturbance in daily routine such as sleep, meals, stress lead to illnesses A.V. 1.12.3. Vedic teachings state that “the illnesses are based on Poisoning, infection and disturbances in Doshas”. poison can gain access to our bodies through injection, ingestion, poisonous animal

bite etc. A.V. 9.8.10. **It is also mentioned that only poison can cure the poisoning** A.V. 5.13.4.
Infectious organisms have been described as visible and invisible A.V. 5.13.4. They exist everywhere and gain access to our body and causes illness. **It is quite amazing that both bad and good bacteria have been described.** Today, probiotics

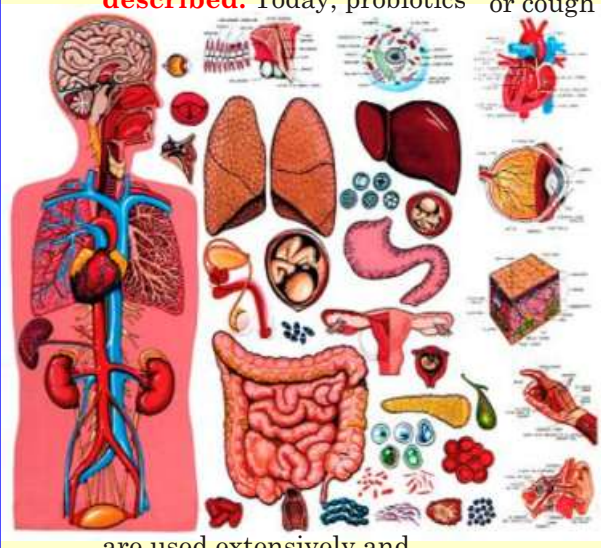

are used extensively and more and more studies are proving the usefulness of probiotics. Many diseases caused by different types of infectious organisms have been described. **Vedas describe the diseases to be both mental and physical.** Excessive lust and ill thoughts are considered serious reasons for illnesses as well.
Rig Veda describes 3 types of medications. Divine, earthly and watery. Pranayama has been given considerable importance in disease management. Eating small, wholesome timely meals and avoidance of constipation have been considered quite important. Good thoughts, purification of mind, being peaceful, use of appropriate medications and doing Yajna on a regular basis have been considered the main way to manage diseases.
Different fevers have been described. These could be with chills, simply high fever or cough predominant.
Change of seasons brings fevers. Again, irregularity in routine and uncleanliness and obesity have been described as the reasons for fever. AV 5.22.5 states that being in place with more rains, forest and lack of sunshine increases chances of fever.

Summary

The Ayurveda is a science which has a holistic approach to promote mental and physical health (prevention and treatment both) and happiness, improved quality of life and longevity. The goal in Ayurveda is on the equilibrium of the primary humors. Digestion of food and desire for eating, having good sleep without nightmares with timely discharge of bodily waste and proper coordinated function of mind and intellect.
Disturbance in food intake, day today living, lack of disciplined life, improper conduct in thought, speech and action leads to disturbed intellect and then it becomes the causes of an illness.
when we compare the knowledge of anatomy, physiology, pathophysiology and treatment of various illnesses as we see these in modern medicine, there appear to be many inconsistencies in knowledge in Ayurveda. Ayurvedic concepts, even though they have existed for thousands of years, seem very modern when we talk about basic principles of living and life style modification as the main stay of management of illnesses. There is absolutely no question that the benefits of Yogic practice with emphasis on Pranayama and meditation exceed any comparative thing that modern medicine has to offer. On the other hand modern medicine has gone ahead by leaps and bounds in management of specific diseases and is and will remain the main stay of treatment of most illnesses. However, **Research in ayurvedic medications may produce some gems and should be perused.**

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

नारी सम्मान

पवित्र वेदों में **'पुरन्धिर्योषा जायताम्'** कहकर नारी को राष्ट्र-जीवन का आधार बताया गया है। अन्यत्र भी कहा है- **'स्त्री हि ब्रह्मावभूविथ'** निश्चय ही स्त्री गृहस्थ यज्ञ या राष्ट्र यज्ञ की ब्रह्मा है। **'इमाः शुद्धाः पूताः यज्ञियाः'**- देवियाँ शुद्ध पवित्र और यज्ञ रूप हैं। नारी के प्रति, मातृशक्ति के प्रति पवित्र वेद का कितना गौरवमयी दृष्टिकोण है। वैदिक युग का सम्पूर्ण इतिहास नारी की गौरव गाथा की प्रेरक कहानी है। कहीं हम अपाला, घोषा, लोपामुद्रा आदि देवियों को ऋषिकाओं के रूप में वेद मंत्रों का रहस्यार्थ खोलते हुए, मंत्र दर्शन करते हुऐ पाते हैं तो कहीं हम विदुषी गार्गी को महाराज जनक की सभा में ऋषि याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ करते देखते हैं। मोक्ष पथ की साधिका मैत्रेयी का अपने पति याज्ञवल्क्य मुनि के साथ संवाद, सीता और सावित्री की आदर्श पति-भक्ति,

अत्रि-अनुसूया का आदर्श गृहाश्रम, माता मदालसा की पुत्र निर्माण कला, माता विदुला द्वारा अपने पुत्र संजय को क्षात्र धर्म की प्रेरणा आदि एक दो नहीं, अनेकानेक चित्रों में मातृ-शक्ति की यह गरिमा, पूर्ण विकसित रूप में उभरकर हमारे समक्ष आई है। अनेक आदर्श नारियों ने समय-समय पर पुरुषों का मार्गदर्शन किया और गृहस्थी को स्वर्ग बनाकर मुक्ति का पथ प्रशस्त किया।

हमारी मातायें उस महान् आचार्य ऋषि दयानन्द की ऋणी हैं, जिसने विष के प्याले, तलवार के वार, ईंट-पत्थरों की वर्षा और गोलियों की बौछार सहकर उन्हें यज्ञ, यज्ञोपवीत, गायत्री जप, संध्योपासना, वेद पाठ और ओ३म् जप का अधिकार देते हुए महाराज मनु के निम्न श्लोक का स्मरण कराया-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः॥ -मनु.(३.५७)

'जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उसमें विद्यायुक्त पुरुष होके देव संज्ञा धरा के आनन्द से क्रीड़ा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहाँ सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं।' मनुस्मृति इसके लिए निर्देश देती है:-

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैता पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥ -मनु. (३.५५)

पिता, भाई, पति और देवर, इनको (घर की स्त्रियों को) सत्कारपूर्वक भूषणादि से प्रसन्न रक्खें, जिनको बहुत कल्याण की इच्छा हो, वे ऐसा करें।

इसलिये ऐश्वर्य की कामना वाले मनुष्यों को योग्य है कि सत्कार और उत्सवों के अवसर पर भूषण-वस्त्र और भोजनादि से स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें।

- संपादक- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।
मात्र ४० ₹
प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-
➲ धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
➲ पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
➲ मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
➲ मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
➲ सुन्दर गेटअप ''५.६X९.०'' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

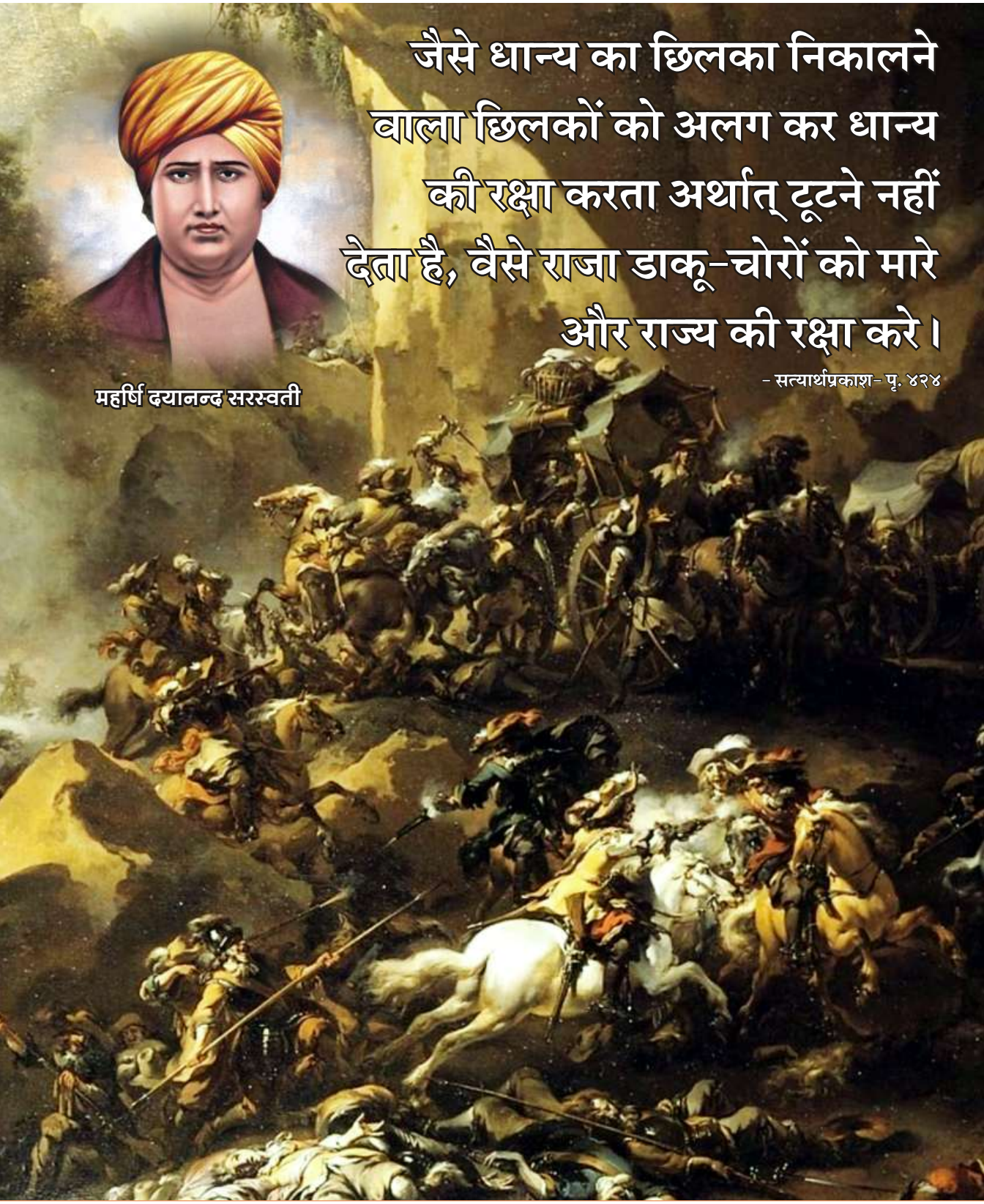

जैसे धान्य का छिलका निकालने वाला छिलकों को अलग कर धान्य की रक्षा करता अर्थात् टूटने नहीं देता है, वैसे राजा डाकू-चोरों को मारे और राज्य की रक्षा करे।

- सत्यार्थप्रकाश- पृ. ४२४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य